HISTORY OF HINDI LITERATURE

ADHUNIK KAAL - PADYA

III SEMESTER

COMPLEMENTARY COURSE OF BA HINDI

2014 Admission Onwards

UNIVERSITY OF CALICUT

SCHOOL OF DISTANCE EDUCATION

Calicut University P.O. 673635

1025

UNIVERSITY OF CALICUT
SCHOOL OF DISTANCE EDUCATION

STUDY MATERIAL

III SEMESTER

Complementary course
2014 Admission Onwards

Prepared & Scrutinised By:
Dr.N.Girija
Associate Professor (Rtd)
Govt. Arts & Science College
Calicut.

Settings & Layout
Computer Section, SDE

@
Reserved

CONTENTS

Module I आधुनिक काल- कविता

Module II छायावादी कविता

Module III प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी कविता, साठोत्तर कविता-अकविता

Module IV समकालीन कविता

Module I
आधुनिक काल- कविता

हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल कब से शुरू हुआ इसके संबंध में विद्धानों में मतभेद है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने सन् 1900 से आधुनिक युग का आरंभ माना। कुछ विद्धान सन् 1850 से ही आधुनिक काल की प्रवृत्तियों की शुरूआत पर संकेत करते है। पूर्ववर्ती तीनों युगों की अपेक्षा आधुनिक युग कई कारणों से भिन्न है। आधुनिक युग में आकर कविता की भाषा खडीबोली बन गयी। पहले साहित्य केवल पद्यबद्ध था, लेकिन आधुनिक काल में आकर पद्य के साथ गद्य के विभिन्न रूपों का भी विकास हुआ। वर्ण्य विषय में भी काफी परिवर्तन दिखायी पडे। जनता में देशव्यापी जागरण का संदेश फैलाना इस समय के साहित्यकारों का लक्ष्य रहा। अतः विषय और शैली की दृष्टि से हिन्दी साहित्य परंपरा के बन्धन से मुक्त होकर एकदम एक नये युग में प्रविष्ट हो रहा था। इस समय के साहित्य पर स्वाभाविक तौर पर तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक तथा साहित्यिक परिस्थितियों का प्रभाव पडा। अन्य विधाओं के समान हिन्दी कविता का भी विकास इन बदली हुई परिस्थितियों के आलोक में हुआ।

आधुनिक कालीन कविता का आरंभ किन किन परिस्थितियों में हुआ? आधुनिक काल की कविता उस समय की राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं साहित्यिक परिस्थितियों से प्रभावित है।

राजनीतिक परिस्थितियाँ: सन् 1757 में सिराजुदौला को प्लासी के युद्ध में पराजित कर के अंग्रेज़ों ने बंगाल पर अधिकार जमाया। 1857 तक आते आते दिल्ली को जीतकर उनका राज्य क्रमशः भारत में फैलता गया। अपने अधीनस्थ प्रदेशों में उन्होंने अपने ढंग की शासन व्यवस्था लागू की। अंग्रेज़ी नीति के विरुद्ध देशी राजाओं, सिपाहियों और किसानों ने मिलकर 1857 में व्यापक तौर पर विद्रोह किया। इस संघर्ष के बाद ईस्ट इन्डिया कंपनी का शासन समाप्त हुआ और भारत ब्रिटीश साम्राज्य का उपनिवेश बन गया। अंग्रेज़ों ने अपनी आर्थिक, शैक्षणिक तथा प्रशासनिक नीतियों को परिवर्तित किया। 1885 में इंडियन नाशनल कांग्रेस की स्थापना हुई। जिससे अंग्रेज़ शासन से मुक्ति की इच्छा तीव्रतर होने लगी। उस समय जो सांस्कृतिक और राष्ट्रीय नवजागरण हुआ उसका प्रभाव तत्कालीन हिन्दी कविता में दिखायी पडता है।

सामाजिक एवं धार्मिक परिस्थिति

सन् 1800 में कलकत्ते में फोर्ट विल्यम कालेज की स्थापना हुई। इससे भारतीय अंग्रेज़ी भाषा और साहित्य से परिचित हुए। इसने जनता को स्वतंत्र चिन्तन की क्षमता दी। इस समय कई सुधारवादी आन्दोलन हुए जो समाज में व्याप्त बुराइयों और अंधविश्वासों को दूर करके जनता में सांस्कृतिक जागरण पैदा करने के लक्ष्य में हुए थे। ब्रह्म समाज, आर्य समाज, रामकृष्ण मिशन, थियोसफिकल सोसाइटी आदि के द्वारा नए भारतीय समाज के निर्माण की प्रक्रिया शुरू हुई। जातिप्रथा का विरोध, सती प्रथा का

विरोध, विधवा विवाह, स्त्री शिक्षा, स्त्री को पुरुष बराबर अधिकार आदि विषयों पर इन संस्थाओं ने ज़ोर दिया। अंग्रेज़ी शिक्षा प्रणाली के प्रसार में भी इन्होंने योग दिया। इन संस्थाओं के द्वारा धार्मिक उद्धार एवं सामाजिक प्रगति संभव हुई।

आर्थिक परिस्थिति

अंग्रेज़ों ने भारत को अपना बाज़ार बनाने के लिए यहाँ के कुटीर धंधों को नष्ट कर दिया। जमीन्दारी प्रथा लागू करके खेत को व्यक्तिगत संपत्ति बना दिया। कृषि का उत्पाध जो पहले गाँवों तक सीमित था, अब बाज़ारों में जाने लगा। महंगाई, अकाल, टैक्स आदि से गरीबी बढती गयी। इस समय की आर्थिक विपन्नता की प्रतिध्वनि तत्कालीन कविता में सुनायी पडती है।

साहित्यिक परिस्थिति

आधुनिक काल में साहित्य जनसाधारण के लिए लिखा जाने लगा। इस युग में राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक नवजागरण हुआ उससे प्रेरणा पाकर भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी, मैथिलीशरण गुप्त आदि साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं के द्वारा लोगों में नयी चेतना जगाने की कोशिश की। गद्य का आविर्भाव तथा गद्य और पद्य में खडी बोली का प्रयोग आदि इस युग की साहित्यिक विशेषतायें हैं। निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि आधुनिक कविता इन बदली हुई परिस्थितियों की उपज है।

आधुनिक हिन्दी कविता का विकास

आधुनिक युग के आरंभ में ही हिन्दी कविता के भाव और शिल्प में आमूल परिवर्तन दृष्टिगत होने लगा। यद्यपि पूर्ववर्ती परंपरा का प्रभाव प्रारंभ में दिखायी पडता है, तो भी धीरे धीरे मध्यकालीन परंपरा से मुक्त होकर हिन्दी कविता आगे बढती गयी। आधुनिक हिन्दी कविता के विकास की दिशाओं को इतिहासकारों ने छायावाद को केन्द्र में रखकर तीन युगों में बाँटा है- पूर्व छायावाद युग, छायावाद युग और छायावादोत्तर युग। पूर्व छायावाद युग को भारतेन्दु युग और द्विवेदी युग नामों से दो भागों में विभाजित किया है।

भारतेन्दु युग

भारतेन्दु युग आधुनिक हिन्दी कविता का प्रथम चरण है। इस काल को पुनर्जागरण काल भी कहा जाता है। इस समय के मेधावी साहित्यकार भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नाम पर इस युग को भारतेन्दु युग संज्ञा दी गयी।

भारतेन्दु युग प्रवृत्तियों की दृष्टि से संधियुग कहा जा सकता है। इस समय की कविता में एक ओर नवीन विषयों का ग्रहण हुआ तो दूसरी ओर पुरानी परंपरा का संरक्षण भी हुआ। इस युग के कवि समाज सुधारक, प्रचारक तथा पत्रकार भी थे। फलतः उन्होंने अपनी कविताओं में समाज में प्रचलित

कुरीतियाँ, धार्मिक मिथ्याचार, पाश्चात्य सभ्यता के बुरे प्रभाव जैसे सामाजिक विषयों की ओर पाठकों का ध्यान आकृष्ट किया। साथ ही साथ इन्होंने भक्ति तथा रीतिकालीन परंपरा का भी निर्वाह किया।

भारतेन्दु युगीन कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ क्या क्या है?

1. **राष्ट्रीयता**

भारतेन्दु पूर्व कविता की राष्ट्रीयता प्रदेशों तक सीमित थी। अब राष्ट्रीयता की भावना व्यापक होने लगी। भारतेन्दु, राधाचरण गोस्वामी, बदरीनारायण चौधरी प्रेमघन जैसे कवियों ने देश के अपकर्ष के लिए उत्तरदायी परिस्थितियों पर प्रकाश डालकर जनमानस में राष्ट्रीयता की भावना के बीजावपन का कार्य किया। भारतेन्दु की विजयिनी विजय वैजयन्ती, प्रेमघन की आनंद अरुणोदय आदि राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत रचनायें हैं। अंग्रेज़ों के शोषण पर इन कवियों ने व्यंग्यपूर्ण कवितायें लिखीं। भारतेन्दु युगीन राष्ट्रीयता के दो पक्ष हैं- देशप्रेम और राजभक्ति। पहले में कवियों ने हिन्दुस्तान का गुणगान किया तो दूसरे प्रकार की रचनाओं में जसिया जैसे कर न लगानेवाले अंग्रेजों की मुक्तकण्ठ प्रशंसा की। भारतेन्दु की भारतभिक्षा, रिपनाष्टक आदि इस दृष्टि से उल्लेखनीय रचनायें हैं।

2. सामाजिक चेतना

भारतेन्दु युगीन कवियों ने सामाजिक जीवन की उपेक्षा न करके जनता की समस्याओं की अभिव्यक्ति की। इस युग में नारी शिक्षा, विधवाओं की दुर्दशा, अस्पृशता आदि सामाजिक समस्याओं को लेकर कवितायें लिखी गयी, जिससे समाज की दृष्टि इन समस्याओं पर गयी। रूढियों का विरोध करके इन्होंने कविता को प्रगति के मार्ग पर अग्रसर कराया। भारत दुर्दशा में भारतेन्दु ने वर्णाश्रम धर्म का खुलकर विरोध किया। शासकों द्वारा देश के आर्थिक शोषण पर विरोध प्रकट करके इन्होंने कवितायें लिखीं। शोषण, महंगाई, अकाल, महामारी और करों के बोझ से त्रस्त भारतीय जनता पर इन कवियों ने सहानुभूतिपरक कवितायें लिखीं।

3. भक्ति भावना

भारतेन्दु युग में तीन प्रकार की भक्ति धारायें दिखायी पडती हैं- निर्गुण भक्ति, वैष्णव भक्ति तथा देशभक्ति। संसार की क्षणिकता, मायामोह की व्यर्थता पर निर्गुण भक्तिपरक कवितायें पूर्ववर्ती युग के समान इस युग में भी लिखी गयी। वैष्णव भक्ति के अन्तर्गत राम, कृष्ण और अन्य देवी देवताओं की स्तुति में कवितायें रची गयी। इनमें कृष्णकाव्य की रचना अधिक हुई। देशहित की भावना से ओतप्रोत देशभक्तिपरक कविताओं में कवियों ने धार्मिक संकीर्णता के विरुद्ध धार्मिक उदारता को अपनाने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया। भारतेन्दु की प्रबोधिनी ऐसी रचनाओं में उल्लेखनीय है।

4. श्रृंगारिकता

पूर्ववर्ती कविता के समान भारतेन्दु युगीन कविता में भी श्रृंगारिकता की प्रवृत्ति दिखायी पडती है। इस युग की कविताओं में चार प्रकार के श्रृंगार वर्णन दृष्टव्य हैं। मध्यकालीन कृष्ण काव्य परंपरा का माधुर्यपरक श्रृंगार वर्णन, रीतिकालीन नख शिख वर्णन, उर्दू कविता के संपर्क से प्रेम का वेदनात्मक चित्रण तथा अंग्रेजी प्रेम कविता से प्रभावित श्रृंगार वर्णन। भारतेन्दु के प्रेम सरोवर, प्रेम माधुरी, प्रेम तरंग आदि में भक्तिपरक श्रृंगार तथा विशुद्ध श्रृंगार दोनों का समावेश है। ठाकुर जगमोहन ने प्रेम का ऐसा निश्छल, सरस और रागात्मक वर्णन किया जो अन्यत्र दुर्लभ है।

5. प्रकृति चित्रण

प्रकृति सौदर्य का स्वच्छन्द वर्णन इस समय की कविता की विशेषता है। प्रकृति के आलंबनात्मक वर्णन अधिकांश कविताओं का विषय है। स्वतंत्र प्रकृति चित्रण ठाकुर जगमोहन सिंह की कविताओं में मिलता है।

6. हास्य व्यंग्य

पश्चिमी सभ्यता, विदेशी शासन, सामाजिक अंधविश्वासों, रूढ़ियों आदि का विरोध करने के लिए भारतेन्दु युगीन कवियों ने व्यंग्य का सहारा लिया। इस दिशा में भारतेन्दु का योगदान महत्वपूर्ण है। उन्होंने पारडी, गाली तथा उर्दू की स्यापा शैलियों को अपनाया। राजनीतिक विसंगतियों पर भी उन्होंने तीखा व्यंग्य किया। प्रेमघन, प्रताप नारायण मिश्र आदि इस समय के अन्य व्यंग्यकार है।

7. रीति निरूपण

भारतेन्दु युग में भी पूर्ववर्ती युग के समान रीति ग्रंथ लिखे गये। लेकिन यह परंपरा इस युग में आकर क्षीण होती गयी। भारतेन्दु ने नाट्यशास्त्र के आधार पर नाटक नामक एक रचना की जो इस समय के काव्यशास्त्र संबंधी रचना है।

भारतेन्दु युग में मौलिक ग्रंथों के साथ साथ संस्कृत, अंग्रेज़ी तथा अन्य भारतीय भाषाओं से काव्यों का अनुवाद भी हुआ।

कलापक्ष

भारतेन्दु युग में मुक्तको की रचना अधिक हुई। प्रबंध, प्रगीत आदि भी रचे गये। लोकसंगीत का काफी उपयोग किया गया। भाषा की दृष्टि से व्रज भाषा के साथ साथ उर्दू तथा प्रान्तीय बोलियों को भी स्थान दिया गया। अंग्रेज़ी से भी प्रचलित शब्दावली को कवियों ने अपनाया।

भारतेन्दु युगीन प्रमुख कवियों का परिचय दीजिए

भारतेन्दु के साथ कई कवि इस समय रचना कर रहे थे। काव्य के आदर्श, विषय वस्तु तथा शैली में इन्होंने भारतेन्दु का ही अनुकरण किया। इसलिए इन साहित्यकारों के मेल को भारतेन्दु मण्डल नाम दिया गया।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (1850-1885)

भारतेन्दु के पिता गोपालचन्द गिरिधरदास अपने समय के प्रसिद्ध साहित्यकार थे। साहित्यिक वातावरण में पलने के कारण बचपन से ही भारतेन्दु ने काव्यरचना आरंभ की थी। कवि के साथ साथ वे पत्रकार भी थे। 'कविवचन सुधा' और 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' उनके संपादन में प्रकाशित पत्रिकायें थीं। पद्य और गद्य दोनों में वे सिद्धहस्त थे। इतिवृत्तात्मक शैली के साथ साथ व्यंग्य का पैनापन भी उनकी रचनाओं में है। इस प्रकार वे अपने समय की कविता में नवयुग के अग्रदूत थे। उनकी काव्यक्षमता इतनी प्रसिद्ध थी कि उनके समकालीन पत्रकारों और साहित्यकारों ने उन्हें भारतेन्दु नाम से सम्मानित किया।

प्रेमघन

बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' भारतेन्दु मण्डल के सबसे प्रसिद्ध कवि थे। गद्य और पद्य दोनों विधाओं में उन्होंने रचनायें की। उर्दू में भी कविता लिखे। प्रेमघन सर्वस्व उनकी कविताओं का संकलन है।

प्रतापनारायण मिश्र

कविता, नाटक और निबंध तीनों क्षेत्रों वे निपुण थे। भारतेन्दु के समान विभिन्न विषयों पर इन्होंने कवितायें लिखीं। भक्ति और प्रेम के साथ साथ देशप्रेम, राजनीतिक चेतना आदि को लेकर भी उन्होंने रचनायें की। प्रेम पुष्पावली, मन की लहर, श्रृंगार विलास आदि उनकी प्रमुख रचनायें हैं।

ठाकुर जगमोहन सिंह

श्रृंगार वर्णन और प्रकृति सौदर्य के चित्रण में ये अद्वितीय थे। ऋतुसंहार, मेघदूत जैसे कालिदास कृतियों का उन्होंने व्रजभाषा में अनुवाद किया।

इन कवियों के अलावा राधाकृष्णदास, राधाचरण गोस्वामी, अंबिकादत्त व्यास, बालमुकुन्द गुप्त आदि भी इस समय के प्रसिद्ध कवि हैं।

द्विवेदी युग

आधुनिक हिन्दी कविता के विकास का दूसरा चरण द्विवेदी युग नाम से जाना जाता है। इस युग की साहित्य चेतना के मूल में महावीर प्रसाद द्विवेदी की प्रेरणा और प्रोत्साहन है। अतः यह युग उनके नाम पर द्विवेदी युग कहा जाता है। भारतेन्दु युगीन प्रवृत्तियों का विकास इस युग में हुआ। लेकिन दो बातों में भिन्नता दिखायी पडती है। भारतेन्दु युग में मुक्तकों की रचना अधिक हुई तो द्विवेदी युग में प्रबन्धात्मकता की प्रधानता है। भारतेन्दु युग में काव्य की भाषा व्रजभाषा थी लेकिन द्विवेदी युग में आकर खडी बोली काव्यभाषा के रूप में प्रतिष्ठित हुई। गणपति चन्द्र गुप्त ने द्विवेदी युग को आदर्शवादी प्रबन्ध काव्यधारा कहा। इस युग में महावीर प्रसाद द्विवेदी और अयोध्या प्रसाद खत्री ने मिलकर काव्य में खडीबोली को प्रतिष्ठित कराने का सशक्त आन्दोलन चलाया। इस युग में कवियों ने पौराणिक तथा ऐतिहासिक कथा संदर्भों को आधार बनाकर प्रबन्ध काव्य लिखने में अधिक ध्यान दिया। इस समय तक आते आते गाँधीजी, तिलक जैसे नेताओं के द्वारा स्वतंत्रता आन्दोलन ज़ोर पकड रहा था। देश व्यापी राष्ट्रीय वातावरण के प्रभाव से तथा अंग्रेज़ी चिन्तकों और विचारकों की रचनाओं के प्रभाव से युवा पीढी में राष्ट्रीयता एवं स्वतंत्रता प्राप्ति की भावना जागृत हो रही थी। द्विवेदी युगीन कविता इन परिस्थितियों से प्रभावित है।

द्विवेदी युगीन कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ क्या क्या है?

राष्ट्रीयता

राष्ट्रीयता इस समय की कविता का मुख्य स्वर है। इस युग के प्रायः सभी कवियों ने देश भक्तिपरक कवितायें लिखीं। उन्होंने पराधीनता को अभिशप्त मानकर स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए संघर्ष एवं आत्मबलिदान करने की प्रेरणा दी। मैथिली शरण गुप्त की भारत भारती राष्ट्रीय काव्यधारा की प्रतिनिधि रचना है। इसमें उन्होंने भारत के अतीत गौरव की प्रशंसा करते हुए वर्तमान दुरवस्था पर भारतीयों का ध्यान आकृष्ट किया। देश की आर्थिक विपन्नता सामाजिक कुरीतियाँ आदि को भी इस समय के कवियों ने अपनी कविता का विषय बनाया।

नीति और आदर्श

द्विवेदी युगीन कविता नीतिपरक और आदर्शवादी है। इतिहास और पुराण के कथासंदर्भों तथा आदर्श पात्रों के जीवन को कवियों ने अपनी रचना का विषय बनाया। इन पात्रों के ज़रिये त्याग, आत्मगौरव, कर्तव्य पालन आदि उच्च आदर्शों की प्रेरणा दी गयी। हरिऔध का प्रियप्रवास मैथिलीशरण गुप्त के साकेत और यशोधरा इस दृष्टि से उत्कृष्ट रचनायें हैं।

मानवता

पूर्ववर्ती युग में ईश्वर, राजा, सामन्त, योद्धा तथा कई प्रकार के नायकों को काव्य में प्रधानता मिली थी। लेकिन द्विवेदी युग में आकर मानव कविता के केन्द्र में आया। सामान्य मानव को कविता में स्थान मिला। किसान तथा विधवाओं के दयनीय जीवन का चित्रण इस समय के कवियों ने किया।

प्रकृति चित्रण

द्विवेदी युग में प्रकृति का स्वतंत्र चित्रण हुआ। प्रकृति वर्णन में स्थूलता, कल्पना का अभाव तथा नीरसता होने पर भी प्रकृति को स्वतंत्र रूप में चित्रित करने की प्रवृत्ति शुरू हुई।

इनके अलावा वर्ण्यविषय की विस्तृति इस युग की कविता की विशेषता है। कवियों ने अतिसाधारण विषय पर भी कवितायें लिखी। हास्य व्यंग्यपूर्ण शैली इस युग की उपलब्धि है। सामाजिक कुरीतियों और धार्मिक पाखण्डों पर व्यंग्यपूर्ण कविताये लिखी गयी। सभी काव्यरूपों को अपनाना, कई छन्दों का प्रयोग तथा भाषा में खडी बोली का आविर्भाव द्विवेदी युगीन कविता की शैलीगत विशेषतायें हैं।

द्विवेदीयुगीन प्रमुख कवियों का परिचय दीजिए

1. महावीर प्रसाद द्विवेदी

महावीर प्रसाद द्विवेदी इस युग की समूची साहित्य चेतना के सूत्रधार युगप्रवर्तक कवि है, जिससे यह युग उनके नाम पर जाना जाता है। सरस्वती पत्रिका के संपादक होकर उन्होंने इस समय की भाषा और काव्यरूपों को निर्धारित किया। मैथिलीशरण गुप्त जैसे इस समय के कई कवि उनकी प्रेरणा प्रोत्साहन में उभरकर आथे थे। द्विवेदीजी ने जनरुचि का प्रतिनिधित्व करते हुए चार बातों पर कवियों का ध्यान आकृष्ट किया- विभिन्न विषयों पर कविता लिखना, सभी छन्दों का व्यवहार करना, सभी काव्यरूपों को अपनाना तथा गद्य और पद्य की भाषा का एकीकरण। द्विवेदीजी के प्रयत्नों से ये चारों बातें स्थापित हो गयी। अतिसाधारण विषयों पर उन्होंने सरल कवितायें लिखीं। काव्य मंजूषा, सुमन आदि उनकी कविताओं का संकलन हैं। मौलिक रचनाकार से ज्यादा अनुवादक के रूप में वे काफी प्रसिद्ध हुए। संस्कृत के कुमार संभव का अनुवाद कुमारसंभावसार नाम में प्रस्तुत करके हिन्दी की नवीन प्रबंध परंपरा को उन्होंने अपना सच्चा समर्थन दिया।

2. अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध

अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध द्विवेदी युग के प्रसिद्ध कवि है। प्रियप्रवास, परिजात, वैदेही वनवास आदि प्रबंध काव्यों की रचना करके उन्होंने अपनी काव्य प्रतिभा का परिचय दिया। प्रियप्रवास खडीबोली हिन्दी का प्रथम सफल महाकाव्य है। इसमें उन्होंने राधा और कृष्ण को शुद्ध मानव के रूप में चित्रित किया। इसमें कृष्ण विश्वमंगल में 'संलग्न एक जननेता के रूप में तथा राधा आधुनिक युग की प्रबुद्ध नारी के रूप में प्रस्तुत किये गये है। राधा अपने वैयक्तिक स्वार्थ से ऊपर उठकर राष्ट्र के लिए सब कुछ त्याग देनेवाली नारी है, जो उस समय के राष्ट्रीय आन्दोलन में नारी के सक्रिय योगदान की सशक्त

प्रेरणा है। वह मानवता के हित के लिए अपने आपको न्योछावर करती है। प्रबंध काव्यों के अलावा हरिऔध जी ने मुहावरेदार बोलचाल की भाषा में चोखे चौपदे, पद्यप्रसून आदि रचनायें भी की।

3. श्रीधर पाठक

द्विवेदी युग में आदर्शवादी प्रबन्ध काव्य के प्रवर्तक के रूप में श्रीधर पाठक का नाम उल्लेखनीय है। मौलिक रचनाओं के साथ साथ उन्होंने अंग्रेजी कविताओं का अनुवाद भी किया। अंग्रेजी स्वच्छन्दतावादी कवि विल्यम गोल्डस्मिथ के हेरमिट का एकान्तवासी योगी तथा डेसर्टड विलेज का उजडा ग्राम से अनुवाद प्रस्तुत किया। खडीबोली ओर व्रजभाषा दोनों में उन्होंने स्वतंत्र रूप से प्रकृति का वर्णन किया। उनकी कविता में अंग्रेज़ी स्वच्छन्दतावाद की कई प्रवृत्तियों का प्रभाव है जिससे वे हिन्दी कविता में स्वच्छन्दतावाद के प्रवर्तक के रूप में माना जाता है।

4. मैथिलीशरण गुप्त

मैथिलीशरण गुप्त आधुनिक हिन्दी कविता के प्रतिनिधि तथा राष्ट्रकवि के रूप में विख्यात है। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के काव्यादर्शों का अनुसरण करते हुए इस युग की काव्यचेतना को उन्होंने और भी स्पष्ट कराया। उन्होंने चालीस से अधिक प्रबन्ध काव्य रचे, जो उनकी विद्वता और कविकुशलता का प्रमाण है। साकेत, यशोधरा, पंचवटी, जयद्रथवध आदि काव्य भारतीय संस्कृति के उच्च आदर्शों तथा नैतिकता के महान तत्वों की ओर पाठकों का ध्यान आकृष्ट करनेवाले है। विषय के समान गुप्तजी की काव्यशैली भी वैविध्यपूर्ण है। मुक्तक, गीतिनाट्य, महाकाव्य, खण्डकाव्य सभी काव्यरूपों को उन्होंने अपनाया। मौलिक रचना के साथ अनुवाद के क्षेत्र में भी उन्होंने सराहनीय कार्य किया। मैकल मधुसूदनदत्त के मेघनादवध को अनुवाद के ज़रिये उन्होंने हिन्दी पाठकों को परिचित कराया।

इन कवियों के अलावा सिचारामशरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी, नाथूराम शर्मा शंकर आदि कई कवियों ने द्विवेदी युगीन काव्य धारा को अपनी रचनाओं से संपन्न बनाया। सरस्वती पत्रिका के द्वारा इस युग के भाषा और साहित्य दृढतर बनते रहे। खडीबोली के परिष्कार और संस्कार का श्रेय द्विवेदीजी और उनके साथियों को है। विषय और शैली की दृष्टि से द्विवेदी युग पूर्ववर्ती युग से अधिक प्रौढ एवं संपन्न है।

Model Short Questions and Answers

1. भारतेन्दु मण्डल का परिचय दीजिए।

भारतेन्दु युग हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल का प्रथम चरण है। यह नवजागरण या पुनर्जागरण काल भी कहा जाता है। 1857 से 1900 तक व्याप्त इस युग के सबसे उल्लेखनीय कवि स्वयं भारतेन्दु थे। भारतेन्दु के साथ उस समय अन्य कई कवि रचना कर रहे थे। काव्य के आदर्श, विषय वस्तु, भाव और शैली की दृष्टि से इन कवियों ने भारतेन्दु का अनुकरण किया था। इन साहित्यकारों के मण्डल को भारतेन्दु मण्डल नाम दिया गया। इन कवियों में प्रमुख थे बदरीनारायण चौधरी प्रेमघन, प्रतापनाराय मिश्र, राधाचरण गोस्वामी, अंबिकादत्त व्यास, बालमुकुन्द गुप्त आदि। भारतेन्दु की कविताओं में विषय वैविध्य है। भक्ति, धार्मिकता, सौदर्य, प्रेम, देशभक्ति, हास्य व्यंग्य आदि विभिन्न प्रवृत्तियाँ उनकी कविताओं में दृष्टव्य है। प्रेमघन की रचनायें प्रेमघन सर्वस्व नाम से संग्रहीत है। प्रतापनारायण मिश्र विनोद भाव पूर्ण कवितायें लिखने में रुचि रखते थे। राधाचरण गोस्वामी ने भक्ति, श्रृंगार और देशभक्तिपरक कवितायें लिखी। अंबिका दत्त व्यास और बालमुकुन्दु गुप्त ने समाज सुधार, भारतीयता एवं राष्ट्रीयता संबंधी कवितायें लिखकर हिन्दी कविता में अपना अलग स्थान पाये। भारतेन्दु मण्डल के कवि अच्छे अनुवादक और सफल पत्रकार भी थे। अपनी वैविध्यपूर्ण कविताओं के ज़रिये इन्होंने हिन्दी कविता को आधुनिकता की ओर अग्रसर कराया।

2. हिन्दी कविता के आधुनिकीकरण के लिए महावीर प्रसाद द्विवेदी ने क्या क्या किया?

आधुनिक हिन्दी कविता के विकास का दूसरा चरण द्विवेदी युग नाम से जाना जाना है। इस युग की साहित्य चेतना के मूल में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के प्रेरणा और प्रोत्साहन है। लंबे समय तक सरस्वती पत्रिका का संपादन करते हुए उन्होंने इस युग के भाषा और साहित्य को सुनिश्चित रूप दिया। अयोध्या प्रसाद खत्री के साथ मिलकर उन्होंने व्रजभाषा के स्थान पर खडीबोली को प्रतिष्ठित कराने का सशक्त आन्दोलन चलाया। खडीबोली के व्याकरण सम्मत रूप, उसके परिष्कार और संस्कार का श्रेय द्विवेदीजी और उनके समकालीन कवियों को है। जनरूचि का प्रतिनिधित्व करते हुए द्विवेदीजी ने विभिन्न विषयों पर कविता लिखने, सभी प्रकार के छन्दों का व्यवहार करने तथा सभी काव्यरूपों को अपनाने का परामर्श देकर हिन्दी कविता को प्रगति के मार्ग पर अग्रसर कराया। पुराण और इतिहास से उपेक्षित पात्रों को लेकर उन्हें आधुनिक संदर्भ में प्रस्तुत करने का उपदेश उन्होंने कवियों को दिया। इससे प्रेरणा पाकर गुप्तजी ने साकेत में उर्मिला और यशोधरा में यशोधरा को युगानुकूल नारी पात्रों के रूप में चित्रित किया। इस प्रकार विषय और शैली की दृष्टि से हिन्दी कविता को आधुनिक बनाने का श्रेय महावीर प्रसाद द्विवेदी को प्राप्त है।

3. मैथिली शरण गुप्त के काव्यों का परिचय दीजिए।

मैथिली शरण गुप्त द्विवेदी युग के उल्लेखनीय कवि है। द्विवेदी की प्रेरणा और प्रोत्साहन से उन्होंने चालीस से अधिक काव्यों की रचना की। उनका पहला काव्य रंग में भंग 1910 में प्रकाशित हुआ। वे द्विवेदीजी के अनुशासन की धारा पर पले साहित्यकार थे। साकेत, पंचवटी, जयद्रथवध, यशोधरा, द्वापर आदि उनके काव्य भारतीय संस्कृति के महान आदर्शों तथा धर्म और नैतिकता के महत्वपूर्ण तत्वों की ओर पाठकों के ध्यान आकृष्ट करानेवाले हैं। काव्य की उपेक्षित ऊर्मिला, कैकेयी, यशोधरा जैसे पात्रों को नए तथा आधुनिक रूप में प्रस्तुत करके हिन्दी काव्य को एक नयी दिशा दी। इन पात्रों के ज़रिये उन्होंने भारतीय नारी में आत्मनिर्भरता, आत्माभिमान कर्तव्य निष्ठा तथा आत्म बलिदान की भावना को जगाने की कोशिश की। उनकी रचनाओं में प्रतिबिंबित राष्ट्रीय चेतना के कारण वे राष्ट्रकवि के नाम से जाने जाते है। वे हिन्दी के सांस्कृतिक काव्य के प्रतिनिधि कवि है। 'भारतभारती' में भारत के अतीत गौरव का गुणगान करते हुए उन्होंने वर्तमान दुरवस्था पर क्षोभ प्रकट करते है। साकेत और यशोधरा गुप्त जी की कीर्ति का आधार है। एक सफल अनुवादक के रूप में भी हिन्दी कविता में उनका अमर स्थान है।

4. हरिऔध के काव्यजीवन का परिचय दीजिए।

अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध द्विवेदी युग के प्रतिष्ठित कवि है। खडीबोली में उनकी कवितायें सरस्वती पत्रिका में बराबर निकलती थी। द्विवेदीजी के प्रभाव से उन्होंने संस्कृत छन्दों और संस्कृत पदावली का सहारा लेकर प्रियप्रवास की रचना की। प्रियप्रवास आधुनिक हिन्दी कविता का प्रथम महाकाव्य है जिसमें मानव मन की दशाओं की सूक्ष्म अभिव्यंजना हुई है। कवि ने इसमें आधुनिक युग में अनुरूप कृष्ण और राधा का चित्रण किया है। प्रियप्रवास का कृष्ण विश्वमंगल में संलग्न जननेता है और राधा आधुनिक युग की प्रबुद्ध नारी है। राधा तत्कालीन राष्ट्रीय आन्दोलन में नारी को सक्रिय भागिदार बनने की सशक्त प्रेरणा है। वह मानवता की प्रतिमूर्ति है। वैदेही वनवास में उन्होंने सीता को समाजसेविका के रूप में चित्रित किया। चोखे चौपदे, पद्य प्रसून, पारिजात आदि हरिऔधजी की अन्य रचनायें हैं।

Module II

छायावादी कविता

Question and Answers

1. छायावादी कविता का नामकरण कैसे संपन्न हुआ?

हिन्दी कविता द्विवेदी युग के बाद एक ऐसे युग में प्रविष्ट हुई जो साहित्य की दृष्टि से अत्यन्त प्रौढ और संपन्न है। साहित्य के इतिहास का यह यौवन काल छायावाद युग नाम से प्रतिष्ठित हुआ। सबसे पहले श्री मुकुटधर पाण्डेय ने इस काव्यधारा के लिए 'छायावाद' शब्द का प्रयोग किया था। उन्होंने उस समय प्रचलित कविता की सूक्ष्मता और अस्पष्टता की ओर ध्यान दिलाते हुए व्यंग्यात्मक रूप में छाया शब्द का प्रयोग किया जो बाद में स्वीकृत हुआ। जयशंकर प्रसाद महादेवी वर्मा जैसे कवियों ने इस विशेषण को बडे प्यार से स्वीकार करके उसकी व्याख्या की। इस प्रकार हिन्दी साहित्य में एक नयी काव्यधारा का उदय हुआ।

2. छायावाद के संबंध में प्रचलित विभिन्न विचार क्या क्या है?

छायावादी कविता भाव और कला के क्षेत्र में एक महान आन्दोलन है। छायावाद को लेकर विद्वानों में मतभेद है। कुछ आलोचक इसे पाश्चात्य साहित्य की रोमांटिक काव्यधारा तथा बंगला साहित्य का अनुकरण मानते हैं। लेकिन अधिकांश विद्वान इससे सहमत नहीं। उनके अनुसार इस काव्यधारा का अपना जीवन दर्शन है। यह भारत की तत्कालीन सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों के प्रभाव से उद्भूत हुई है। यद्यपि उन्नीसवीं सदी की अंग्रेजी रोमांटिक काव्यधारा के कुछ सामान्य तत्व इसमें मौजूद हैं, फिर भी यह पाश्चात्य कविता का अनुकरण नहीं है।

3. छायावाद की विभिन्न परिभाषायें क्या क्या हैं?

विभिन्न आलोचकों ने इस नयी काव्यधारा को अपने अपने दृष्टिकोण से अलग अलग परिभाषायें दी हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के शब्दों में "छायावाद शब्द का प्रयोग दो अर्थों में समझना चाहिए। एक तो रहस्यवाद के अर्थ में जहाँ उसका संबंध काव्य वस्तु से होता है अर्थात् जहाँ कवि उस अनन्त और अज्ञात प्रियतम को आलंबन बनाकर अत्यन्त चित्रमयी भाषा में प्रेम की अनेक प्रकार से व्यंजना करता है। छायावाद का दूसरा प्रयोग काव्यशैली या पद्धति विशेष के व्यापक अर्थ में है।

डॉ. नगेन्द्र ने छायावाद को एक ओर स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह माना तो दूसरी ओर उन्होंने इसे जीवन के प्रति एक भावात्मक दृष्टिकोण कहा। हज़ारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार छायावाद एक सांस्कृतिक परंपरा का परिणाम है। काव्य की यह भारतीय परंपरा अंग्रेज़ी साहित्य से प्रभावित अवश्य है, लेकिन उसकी अनुकृति नहीं। गणपति चन्द्र गुप्त के अनुसार छायावाद की मूलचेतना का विश्लेषण करने

पर उसे स्वच्छन्दवाद कहना अधिक समीचीन है। जयशंकर प्रसाद के शब्दों में "छाया भारतीय दृष्टि से अनुभूति और अभिव्यक्ति की भंगिमा पर निर्भर करती है। ध्वन्यात्मकता, लाक्षणिकता सौदर्यमय प्रतीकविधान तथा उपचार वक्रता के साथ स्वानुभूति की विवृति छायावाद की विशेषतायें है।

4. छायावाद के उद्भव के लिए कारणभूत परिस्थितियों पर प्रकाश डालिये:-

छायावादी काव्य पर उस समय की राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक और साहित्यिक परिस्थितियों का स्पष्ट प्रभाव दिखायी पडता है।

राजनीतिक परिस्थिति

छायावादी कविता दो विश्वयुद्धों के बीच की कविता है। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में कई महत्वपूर्ण मोड आये। इस समय गांधीजी द्वारा सत्य, अहिंसा और असहयोग से युक्त कई प्रयोग चल रहे थे। छायावादी कवि इस समय की राजनीतिक गतिविधियों से उदासीन दिखायी पडते है। अतः इस समय की राजनीतिक घटनाओं का उल्लेख छायावादी काव्यधारा में बहुत कम दिखायी पडता है।

सामाजिक परिस्थिति

पाश्चात्य सभ्यता, संस्कृति और अर्थ व्यवस्था के प्रभाव से भारतीय समाज के सभी क्षेत्रों में नये परिवर्तन आए। इससे सांस्कृतिक क्षेत्र में स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्ति को प्रश्रय मिला। स्वतंत्र चिन्तनवाले शिक्षित युवा लोग अनाचारों और धार्मिक रूढियों को समाप्त करना चाहते थे। लेकिन रूढिग्रस्त सामाजिक व्यवस्था के सामने उनके सपने चकनाचूर हो गये। अतः युवापीढी में असन्तोष और निराशा व्याप्त होने लगी। छायावादी कविता में इसकी अभिव्यक्ति स्पष्ट दिखायी पडती है।

धार्मिक परिस्थिति

इस युग में धर्म और आध्यात्म के क्षेत्र में रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, गांधीजी, रवीन्द्रनाथ टागोर, अरविन्द जैसे महान व्यक्तियों के दर्शनों का प्रभाव था। इससे धार्मिक संकीर्णता के स्थान पर व्यापक विश्वधर्म की प्रतिष्ठा हुई। विश्व कल्याण और विश्वशान्ति के संदेशों से छायावादी कवि प्रभावित हुए।

साहित्यिक परिस्थिति

अंग्रेज़ी स्वच्छन्दतावादी कविता की प्रवृत्तियों का गहरा प्रभाव छायावादी कवियों की कविताओं में दिखायी पडता है। रूढियों के प्रति विरोध, स्वच्छन्द प्रेम दृष्टि, व्यापक मानवता की प्रतिष्ठा, सूक्ष्म

वैयक्तिक अनुभूतियों की अभिव्यक्ति प्रकृति में चेतना का आरोप आदि प्रवृत्तियाँ अंग्रेज़ी रोमांटिक कविता के समान हिन्दी की छायावादी कविता में भी दृष्टिगत होती हैं। फिर भी हिन्दी के छायावाद को अंग्रेज़ी रोमांटिक काव्यधारा का अनुकरण मानना समीचीन नहीं। दोनों अलग अलग देश काल में उत्पन्न होने पर भी दोनों को विकास के लिए अनुकूल जो परिस्थितयाँ हुई थीं, उनमें समानता अवश्य थी।

5. छायावादी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए?

छायावादी कविता भाव और कला के क्षेत्र में एक महान आन्दोलन है।

भावपक्ष पर आधारित विशेषतायें

1. *व्यक्तिवाद*

छायावादी कविता का व्यक्तिवाद आधुनिक औद्योगिकता से उत्पन्न व्यक्तिवाद है। इन कवियों ने वैयक्तिक सुख दुःख की अभिव्यक्ति खुलकर की। प्रसाद का काव्य आंसु, पन्त का उच्छवास आदि वैयक्तिक भावों पर आधारित है। उनके व्यक्तिवाद में पूरा समाज विद्यमान है। इस पर संकेत करके निराला ने लिखाः-

मैंने मैं शैली अपनायी
देख एक दुःखी निजी भाई।

छायावाद का हास और रूदन प्रत्येक भारतीय का हास रूदन है। अतः यह कविता सहज ही प्रेषणीय बन गयी।

2. *प्रकृति चित्रण*

छायावाद मूलतः प्रेम और सौदर्य की कविता है। कवियों ने तीन रूपों में इसका चित्रण किया। नारी सौदर्य और प्रेम का चित्रण, प्रकृति सौदर्य और प्रेम की अभिव्यंजना, अलौकिक प्रेम या रहस्यवाद का चित्रण। तीनों प्रकार की अभिव्यक्ति के लिए कवियों ने प्रकृति को माध्यम बनाया। छायावादी कवियों के नारी सौदर्य के चित्रण में अश्लीलता या नग्नता का समावेश नहीं। कामायनी में श्रद्धा के सौदर्य का वर्णन प्रकृति के जरिये प्रसाद ने यों किया-

"नील परिधान बीच सुकुमार
खुल रहा मृदुल अधखुला अंग
खिला हो ज्यों बिजली का फूल
मेघवन बीच गुलाबी रंग"

छायावादी कवियों ने प्रकृति में चेतनता का आरोप किया। प्रकृति को नारी के रूप में देखकर इन्होंने सौदर्य और प्रेम की अभिव्यक्ति की। निराला की जुही की कली में जुही की कली और पवन के द्वारा कवि ने नारी और पुरुष के संयोग श्रृगार का चित्रण किया है। इस प्रकार संयोग और वियोग पक्ष के प्रेम को उन्होंने अपनी ही अनुभूतियों के आधार पर चित्रित किया। इन कविताओं में स्थूल क्रिया व्यापारों की अपेक्षा सूक्ष्म मानसिक दशाओं के चित्रण को महत्व दिया गया है। पन्त की वीणा जैसी रचनायें भावात्मक रहस्यवाद पर आधारित है। छायावादी कवियों की कविताओं में अलौकिक सत्ता के प्रति प्रेम की भावना पायी जाती है। महादेवी प्रसाद आदि की कवितायें दार्शनिक भाव से ओत प्रोत हैं।

3. विद्रोह की भावना

छायावादी कविता में स्वच्छन्दता की प्रवृत्ति और उससे उद्भूत विद्रोह का तत्व दिखायी पडता है। छायावादी कवियों ने तत्कालीन समाज और साहित्य के क्षेत्र की रूढियों का विरोध किया। निराला की कविता में सामाजिक रूढियों के प्रति विद्रोह की भावना सबसे सफल रूप में अभिव्यक्त है। प्रेम को भी छायावादी कवि स्वच्छन्द सुन्दर और नए रूप में प्रस्तुत किया। उनका प्रेम जति धर्म, वर्ण और सामाजिक रूढियों के बन्धनों से मुक्त विशाल मानव प्रेम है। प्रेयसी कविता में निराला का दृष्टिकोण इस प्रकार व्यक्त है-

भिन्न धर्म, भाव, पर

केवल अपनाव से, प्राणों से एक थे।

साहित्य के क्षेत्र में भी इन कवियों ने परंपरागत शैली को तोडकर नए प्रयोग किया। मुक्त छन्द की कविता इसका दृष्टान्त है।

4. युग का प्रभाव

यद्यपि छायावदी कविता व्यक्तिवादी रही, फिर भी वह समाज से दूर नहीं थी। उस युग की राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति इनकी कविताओं में हुई है। तत्कालीन भारतीय जीवन में जो सांस्कृतिक राजनीतिक धार्मिक और सामाजिक जागरण हो रहा था, उसका प्रभाव छायावादी कविता में दृष्टिगत होता है। स्वतंत्रता का आह्वान इनकी कविताओं में यत्र त्र मिलता है। कामायनी में प्रसाद ने युगीन समस्याओं का समाधान प्रतीकात्मक रूप में दिया है।

5. मानवतावाद

छायावादी काव्य भारतीय सर्वात्मवाद और अद्वैतवाद से प्रभावित है। इसके अलावा इसमें रामकृष्ण परमहंस, विवेकानंद, गांधीजी, टागोर और अरविंद के दर्शनों का प्रभाव पडा है। इससे विशाल

मानवतावाद का स्वर इन कविताओं में मुखरित है। समाज के उपेक्षित वर्ग के साथ साथ युग युगों से उत्पीडित, नारी को मुक्त कराने का आह्वान भी छायावादी कविता में हैं।

शैलीगत विशेषतायें

छायावादी कवियों के स्वच्छन्द दृष्टिकोण का परिचय केवल उनकी कविता के भाव पक्ष में ही नहीं, बल्कि शैली या कलापक्ष में भी मिलता है। छायावाद के साथ हिन्दी कविता में नये प्रकार की काव्यशैली का आरंभ हुआ।

छायावादी कवियों ने प्रतीकवादी शैली को अपनाया। उन्होंने अपनी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति के लिए प्रकृति के विभिन्न वस्तुओं को प्रतीक बनाया। उषा आनंद के संध्या उदासी के, फूल सुख के प्रतीक बन गये।

छायावादी कविता की भाषा चित्रात्मक है। इसमें लाक्षणिक पदावली का भी समावेश है। प्रसाद की ये पंक्तियाँ चित्रमयी भाषा का सुन्दर उदाहरण है-

"शशिमुख पर घूंघट डाले, अंचल में दीप छिपाये

जीवन की गोधूली में कौतूहल से तुम आये"

छायावादी कवियों ने गीति शैली में काव्य लिखा। इसमें संगीतात्मकता की प्रधानता है। छन्द और संगीत की दृष्टि से छायावादी काव्य उच्चकोटि के है। छायावादी कवियों ने परंपरागत अलंकारों के अतिरिक्त अंग्रेज़ी साहित्य के दो अलंकार- मानवीकरण और विशेषण विपर्यय का सफल प्रयोग किया। मुक्त छन्द को अपनाने हुए उन्होंने कविता को परंपरा के बंधन से मुक्त कराया।

इस प्रकार भाव और शैली के क्षेत्रों में नयी प्रवृत्तियों को आत्मसात करते हुए छायावाद ने हिन्दी कविता को प्रगति के मार्ग पर अग्रसर कराया।

6. छायावाद के प्रमुख कवियों का उल्लेख दीजिए:-

जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पन्त, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला और महादेवी वर्मा छायावाद के आधार स्तंभ कवि हैं। इनके अलावा रामकुमार वर्मा, माखनलाल चतुर्वेदी, भगवती चरण वर्मा, सुभद्राकुमारी चौहान आदि भी इस समय के उल्लेखनीय कवि हैं। प्रवृत्तिगत दृष्टि से प्रसाद, पन्त, निराला और महादेवी वर्मा छायावाद के महत्वपूर्ण कवि हैं।

7. छायावादी कविता में जयशंकर प्रसाद का स्थान निर्धारित कीजिए:-

जयशंकर प्रसाद हिन्दी की छायावादी कविता के प्रवर्तक कवि माने जाते है। कविता के अलावा उन्होंने नाटक, कहानी, उपन्यास और निबंध के क्षेत्रों में अपनी प्रतीभा का परिचय दिया। पहले वे व्रजभाषा में लिखते थे। महाराणा का महत्व, प्रेमपथिक करुणालय आदि उनकी प्रारंभिक कविताओं का संग्रह हैं। 1913 में प्रकाशित प्रसाद जी की झरना में छायावादी काव्यप्रवृत्तियाँ सर्वप्रथम प्रकट होती हैं।

'आँसु' प्रसादजी की अत्यन्त प्रसिद्ध काव्य कृति है। आँसु एक स्मृति काव्य है जिसमें कवि ने अतीत की अनुभूतियों को स्मृतियों के माध्यम से दर्द भरी अभिव्यक्ति दी है। आसु का आरंभ वैयाक्तिक वेदना से होता है और उसका अन्त विश्व वेदना में परिणत होता है। कवि की वैयक्तिक वेदना और निराशा व्यक्ति से ऊपर उठकर करुणा या विश्व प्रेम के रूप में परिवर्तित हो जाती है। इससे कवि यह भी साबित करते है कि छायावादी काव्य निराशावादी या पलायनवादी काव्य नहीं, बल्कि उसमें विश्व कल्याण की भावना अन्तर्विहित है।

'लहर' प्रसादजी का बदचर्चित काव्य संग्रह है। इस संग्रह के गीतों में एक ओर प्रकृति सौदर्य का चित्रण है तो दूसरी ओर प्रणय की तीव्रता और करुणा तथा रहस्यवाद का चित्रण मिलता है।

'कामायनी' प्रसादजी की श्रेष्ठ तथा अन्तिम कृति है। यह छायावाद का एक महाकाव्य भी है। आदि मानव मनु और श्रद्धा की कथा पर आधारित इस काव्य में इतिहास, पुराण, दर्शन, मनोविज्ञान और आध्यात्म का सुन्दर सामंजस्य मिलता है। कामायनी की कथावस्तु प्राचीन आख्यान पर आधारित है। इसके अनुसार मनु को छोडकर संपूर्ण देवजाति महाप्रलय का शिकार हो जाती है। श्रद्धा या कामायनी से मिलकर मनु मानव सभ्यता का नींव डालता है। कवि ने इस कथानक में मानव जीवन के कई पहलुओं को समन्वित करने का प्रयास किया है। मनु, श्रद्धा, इडा आदि इसके पात्र ऐतिहासिक अस्तित्व रखते हुए भी प्रतीकात्मक पात्र हैं। मनु आज के आत्मकेन्द्रित व्यक्ति का प्रतीक है तो इडा पूंजीवादी शोषण की मान्यताओं पर आधारित बुद्धितत्व का प्रतीक है। श्रद्धा मनुष्य की सहज मानवीय भावनाओं और नैतिक मूल्यों से युक्त मानव हृदय के श्रद्धातत्व का प्रतीक है। इन तीन पात्रों के ज़रिये प्रसादजी ने बुद्धिवाद का विरोध और हृदय तत्व की प्रतिष्ठा करते हुए शैवदर्शन के आनंदवाद को जीवन के परम उत्कर्ष का साधन माना है। मानव मनोवृत्तियों का सूक्ष्म चित्रण, नारी सौदर्य का अंकन, प्रेम की मार्मिक अभिव्यंजना, प्रतीकात्मकता, व्यक्तिवाद, लाक्षणिकता, गेयता आदि छायावाद की सभी प्रवृत्तियों का सुन्दर समन्वय कामायनी में हुआ है। वस्तुतः कामायनी छायावाद के ही नही, संपूर्ण हिन्दी कविता का अन्यतम महाकाव्य है।

हिन्दी कविता के इतिहास में इतिवृत्तात्मकता के स्थान पर प्रसादजी ने भावात्मक कविता की प्रतिष्ठा की। एक ओर उन्होंने वैयक्तिक अनुभूतियों की कविता लिखी तो दूसरी ओर संस्कृति, इतिहास,

समाज, मानवता आदि के उदात्त भावों को भी काव्य में प्रस्तुत किया। सही अर्थ में जयशंकर प्रसाद एक मानवतावादी और युगान्तरकारी महाकवि है।

8. सुमित्रानंदन पन्त की काव्ययात्रा का परिचय दीजिए:

जयशंकर प्रसाद ने जिस छायावादी काव्य प्रवृत्ति की नींव डाली थी, उसका समुचित विकास सुमित्रानंदन पन्त के द्वारा हुआ। सुकोमल भावनाओं के कवि पन्तजी प्रकृति के सुकुमार कवि है। मातृस्नेह से वंचित बचपन से लेकर अपने जन्मदेश अल्मोड़ा के प्रकृति सौदर्य से पन्तजी अभिभूत हो गये। उन्होंने प्रकृति के अनेक रूपों की कल्पना की। प्रकृति पर उनका मन इतना डूब गया कि जीवन की व्यापकता और अनेकरूपता की ओर उनका ध्यान बहुत कम आकृष्ट हुआ। लेकिन बाद में उनकी काव्य दृष्टि प्रकृति से हटकर मानव पर केन्द्रित हुई। पन्तजी की काव्ययात्रा के कई महत्वपूर्ण मोड हैं। इसमें उनके छायावादी, प्रगतिवादी और मानववादी रूप देखने को मिलते है। वीणा, ग्रंथि, पल्लव, गुंजन आदि उनके छायावादी कविताओं के संकलन हैं। इन संग्रहों में कवि प्रकृति सौदर्य पर मुग्ध होकर नारी सौदर्य के प्रति उदासीन दिखायी पडते है। पल्लव का छायावादी काव्य के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है। परिवर्तन शीर्षक उनकी प्रसिद्ध कविता इस संग्रह में संकलित है। 'युगान्त' में आकर कवि का छायावादी काव्य जीवन समाप्त होता है। युगवाणी और ग्राम्या में आकर पन्त की काव्य शैली और भावबोध प्रगतिवादी चेतना से प्रभावित दिखायी पडता है। ग्राम्या में कवि कहते है-

> "तुम वहन कर सको जनमन में मेरे विचार, वाणी मेरी चाहिए तुम्हें क्या अलंकार!" यहाँ आकर कवि की भाषा लाक्षणिकता को छोडकर सरलता और स्पष्टता की ओर बढ गयी है। इन संग्रहों की कविताओं में कवि मार्क्सवादी दर्शन से गहरी आस्था प्रकट करते है। अतः इनमें अनुभूति के स्थान पर विचार का अधिक महत्व दिया गया है।

स्वर्ण किरण, स्वर्ण धूलि आदि काव्य कृतियों पन्तजी के काव्य जीवन के विकास का तीसरा महत्वपूर्ण चरण है। इनमें कवि आध्यात्मिकता की ओर झुक जाते है। इन संग्रहों की कविताओं में वे अरविन्द दर्शन से प्रभावित दिखायी पडते है। लोकायतन महात्मा गाँधी पर लिखा उनका प्रबन्ध काव्य है। चिदंबरा नामक संग्रह के लिए वे ज्ञानपीठ पुरस्कार से पुरस्कृत हुए है।

9. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला के व्यक्तित्व और कृतित्व का संक्षिप्त परिचय दीजिए:

छायावादी कवियों में सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला सदा निराला रहे है। उनके समूचे व्यक्तित्व और कृतित्व में एक अद्‌भुत निरालापन व्याप्त है। सन् 1916 में 'जुही की कली' शीर्षक कविता के साथ निरालाजी हिन्दी काव्य जगत में आये। इस कविता में जो प्रणय और श्रृंगार का खुला चित्र था, वह उस आदर्शमय युग के लिए अनुकूल नहीं था। यही नहीं कविता मुक्त छन्द की शैली की थी, जो तत्कालीन काव्य संबंधी मान्यताओं के विरुद्ध थी। लेकिन विरोधों का सामना करते हुए वे अपनी नयी शैली के

साथ आगे बढे। निराला के पहले काव्यसंकलन 'परिमल' में भाव और शिल्प की विविधता दिखायी पडती है। इसमें संकलित गीतों में प्रणय के मधुर भाव के साथ-साथ ओज भरा भाव भी है। संध्या सुन्दरी, बादलराग आदि निराला की प्रकृति पर आधारित प्रसिद्ध कवितायें इस संग्रह में है। छायावाद के साथ इन कविताओं में प्रगातिशीलता के तत्व भी विद्यमान हैं। विधवा, भिक्षुक आदि कवितायें उनकी सामाजिक चेतना को अभिव्यक्त करनेवाली हैं। अनामिका नामक काव्य संग्रह में रहस्यवादी प्रवृत्ति से भरी कवितायें हैं। सरोजस्मृति इस संग्रह की बहुचर्चित कविता है। यह हिन्दी का प्रसिद्ध शोकगीत है। अठारह साल की छोटी आयु में मृत अपनी इकलौती बेटी सरोज की स्मृति में लिखी इस कविता में कवि की वात्सल्य और करुणा की धारा उमड पडती है। गीतिका संगीत प्रधान कविताओं का संकलन है। इसमें प्रार्थनापरक, प्रकृति संबंधी गीतों के साथ साथ नारी सौदर्य पर आधारित तथा विचारपरक गीत भी प्रस्तुत हुए हैं। तुलसीदास निराला का श्रेष्ठ काव्य है जिसमें उन्होंने गोस्वामी तुलसीदास के माध्यम से भारतीय परंपरा के सनातन मूल्यों की प्रतिष्ठा करने की कोशीशि की है।

निराला की 'राम की शक्तिपूजा' संपूर्ण छायावादी काव्य की महान उपलब्धि है। इस लंबी कविता में निराला ने ऐतिहासिक संदर्भ के द्वारा धर्म और अधर्म के शाश्वत संघर्ष का चित्रण किया है। राम धर्म का प्रतीक है और रावण अधर्म का। यह एक ओर कवि के व्यक्तिगत जीवन के भयानक संघर्षों से संबंधित है तो दूसरी ओर युगीन स्च्चाइयों की कठोरता को भी प्रस्तुत करती है। 'कुकुरमुत्ता' शीर्षक कविता में निराला ने पूँजीपतियों पर तीखा व्यंग्य किया है। इसमें कवि ने बोलचाल के शब्दों का प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया है। अणिमा, बेला, अर्चना, नए पत्ते, आराधना आदि निराला के अन्य प्रसिद्ध काव्य संकलन हैं।

हिन्दी कविता में निराला के समान प्रतिभावान कवि नहीं के बराबार है। वे क्रान्तिकारी और क्रान्तदर्शी कवि थे। भाव और शिल्प के क्षेत्र में उन्होंने कई नए प्रयोग किये। उनकी कविता में छायावाद, रहस्यवाद, प्रगतिवाद के ही नहीं प्रयोगवाद की प्रवृत्तियों के भी लक्षण दिखायी पडते हैं। अतः निराला को पूरे शताब्दी के कवि मानना अधिक समीचीन है।

10. महादेवी वर्मा के काव्य जीवन का परिचय दीजिए:

सजल गीतों की गायिका महादेवी वर्मा आधुनिक मीरा के नाम से हिन्दी काव्यजगत में जानी जाती है। वे छायावाद युग की अकेली कवयित्री है। नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, दीपाशिखा आदि काव्य संकलनों के द्वारा महादेवी ने अपनी अनूठी काव्य प्रतिभा का परिचय दिया है। यामा संग्रह में नीहार,रश्मि, नीरजा और संध्यागीत के गीतों को संकालित किया गया है। इस संग्रह के लिए उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है। महादेवी कुशाल चित्रकार भी है। उनकी कविताओं की चित्रात्मक शैली से पाठक सहज ही आकृष्ट हो जाते है। उनकी कविताओं में जिज्ञासा, वेदना, करुणा, निराशा और आध्यात्मिक रहस्यवाद के भाव मिलते हैं।

महादेवी की भावचेतना और सौदर्य दृष्टि छायावादी है। उनकी कविताओं में अलौकिक प्रेम और रहस्यवादी भावनाओं का सबसे अधिक स्थान है। उनका संपूर्ण जीवन अज्ञात अलौकिक प्रियतम के चरणों पर समर्पित है। प्रियतम के विरह में उनकी आत्मा पल पल तडपती है। इस अलौकिक प्रेम की विभिन्न अनुभूतियों को उन्होंने कविता में वाणी दी है। कुछ विद्धान महादेवी की रहस्यवादी अनुभूतियों को अलौकिक प्रेम से उत्पन्न मानकर उन्हें कबीर, मीराबाई आदि की कोटि में गिनते है तो कुछ आलोचनों ने महादेवी के रहस्यवाद को केवल कल्पना पर आधारित माना है।

महादेवी की प्रणय भावना में वेदना की प्रमुख्रता है। वे प्रिय से मिलना तो चाहती है, लेकन संयोग से ज्यादा वियोग उन्हें अधिक प्रिय लगता है। कवि के शब्दों में :-

"मिलन का मत नाम लो, विरह में मैं चिर हूँ।" महादेवी की विरह वेदना में लोकमंगल की भावना है। उसमें बौद्धधर्म का प्रभाव है, जिसमें करुणा और सेवा की भावना प्रमुख हैं। कवयित्री स्वयं नीरभरी दुःख की बदली बनकर सृष्टि के लिए सुख और शीतलता की वर्षा करना चाहती है। सप्तपर्णा महादेवी का नवीनतम काव्य संग्रह है। यह वैदिक संस्कृत के विभिन्न काव्यांशो से संबंधित है।

महादेवी की कविताओं का कलापक्ष अत्यन्त उज्ज्वल है। उनकी गीतशैली अत्यन्त प्रभावात्मक है। संस्कृत निष्ठ भाषा, संगीतात्मक शैली, प्रतीकों, बिंबों और उपमानों की गहराई, प्रकृति का मानवीकरण अति सूक्ष्म वर्णन शैली आदि की दृष्टि से महादेवी की कविता बेजोड है।

11. छायावाद युग के अन्य प्रमुख रचनाओं का परिचय दीजिए:

छायावाद युग में चार महान कवियों के अलावा और भी अनेक कवि हुए जिन्होंने युगीन काव्यप्रवृत्तियों को अपनाकर कविता लिखे। डॉ. रामकुमार वर्मा की अंजली, अभिशाप, चित्रलेखा आदि इस समय की प्रसिद्ध छायावादी रचनायें हैं। इसी प्रकार उदयशंकर भट्ट ने तक्षशिला मानसी, विसर्जन आदि रचनायें की जो सरसता और मधुरता की दृष्टि से उल्लेखनीय है।

12. छायावादी कविता की महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ क्या क्या है?

हिन्दी काव्य क्षेत्र में छायावाद का महत्व अधिक समय तक नहीं रहा। लेकिन अपने जीवनकाल में छायावाद ने हिन्दी कविता को सौदर्य और अलौकिक प्रेमभावना से सुगन्धित और सुशोभित रखा। इस कविता ने मानवता को महत्व दिया। इसने खडी बोली को सुकुमार और सौष्ठव से संपन्न करके काव्योपयुक्त भाषा बना दिया। इस प्रकार छायावाद ने भाव और भाषा के क्षेत्र में निश्चय ही एक क्रान्ति उपस्थित की थी।

Module III

प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी कविता, साठोत्तर कविता-अकविता

I छायावादोत्तर युग के उत्तर छायावादी कविता का परिचय दीजिएः

हिन्दी काव्य जगत में छायावादी कविता का प्रभाव करीब बीस साल तक बना रहा। उसके बाद कुछ ऐसे कवि उभर आये जिनकी कविता में छायावादी प्रवृत्तियाँ उतनी नहीं दिखायी पडी। इस समय कुछ कवि व्यक्तिचेतना पर आधारित कवितायें लिखीं तो कुछ ने देश की राजनीतिक परिस्थितियों से प्रभावित होकर राष्टिय चेतना को कविता का विषय बनाया। वैयक्तिकता प्रधान कवितायें लिखनेवालों में हरिवंश राय बच्चन का नाम उल्लेखनीय है तो राष्ट्रीय चेतना से ओत प्रोत काव्यधारा में रामधारी सिंह दिनकर, माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा नवीन, सोहनलाल द्विवेदी, सुभद्राकुमारी चौहान आदि प्रमुख हैं।

II बच्चन की कविताओं की विशेषतायें क्या क्या है?

उत्तर छायावादी काव्यधारा में व्यक्ति चेतना प्रधान कविता लिखनेवालों में हरिवंशराय बच्चन अग्रणी कवि है। मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश, निशा निमंत्रण, एकान्त संगीत आदि संकलनों में बच्चन ने प्रेम की तीव्रता, जवानी की मस्ती, सौदर्य की उन्मत्तता आदि को वाणी दी। उमर ख़य्यां की कविता से प्रभावित होकर यौवन की मस्ती को प्रधानता देने के कारण कुछ आलोचनों ने बच्चन को हालावादी कवि की संज्ञा दी। उनकी प्रारंभिक कविताओं में वैयक्तिकता की प्रधानता है तो परवर्ती कवितायें सामाजिक चेतना से ओत प्रोत है। बंगाल का काल इस दृष्टि से उल्लेखनीय है। बच्चन की गीति शैली उन्हें हिन्दी का सबसे लोकप्रिय कवि बना दिया।

III कवि रामधारी सिंह दिनकर का परिचय दीजिएः

उत्तर छायावादी काल की राष्ट्रीय काव्यधारा के कवियों में रामधारी सिंह दिनकर अद्वितीय है। उन्होंने देश की राजनीतिक गतिविधियों को आधार बनाकर राष्ट्रीय और सांस्कृतिक चेतना से ओतप्रोत कवितायें लिखीं। रेणुका, हुंकार, रसवती आदि उनके प्रारंभिक काव्य संग्रह हैं। कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, उर्वशी, परशुराम की प्रतीक्षा उनके प्रमुख काव्य हैं। दिनकर की रचनाओं में संवेदना और विचार का सुन्दर समन्वय है। कुरुक्षेत्र दिनकर की प्रसिद्धि का आधार है। इसमें उन्होंने महाभारत के कथा संदर्भ में युद्ध और शान्ति की चर्चा की है। उर्वशी के लिए उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ था। देश और युग सत्य के प्रति जागरूकता उनकी संपूर्ण कृतियों में दिखायी पडती है। दिनकर की भाषा ओजपूर्ण है। अतः वे हिन्दी काव्य जगत में पौरुष और ओज के कवि माने जाते है।

IV प्रगतिवादी कविता के प्रेरणास्रोत और परिस्थितियों पर प्रकाश डालिएः-

राजनीति में जो मार्क्सवाद है, साहित्य में वह प्रगतिवाद है। प्रगतिवादी काव्यधारा में कार्ल मार्क्स के भौतिकवादी विचारधारा पर आधारित समाजवादी चिन्तनों की प्रमुखता है। डॉ. गणपति चन्द्रगुप्त ने इस काव्यधारा को समाजपरक यथार्थवादी काव्य परंपरा नाम दिया।

प्रगतिवादि कविता के उद्‌भव और विकास में एक ओर राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों का प्रभाव है तो दूसरी ओर छायावादी व्यक्तिवादी काव्यधारा की प्रतिक्रिया भी मौजूद है। इस समय रूस में मार्क्सवादी दर्शन के आधार पर स्थापित साम्यवाद का प्रचार दुनिया भर में फैल रहा था। भारत के बुद्धिजीवी वर्ग भी मार्क्सवादी सिद्धान्तों की ओर आकर्षित होने लगे थे। इसका प्रमुख कारण देश की उस समय की परिस्थितियाँ थी। गांधीजी के नेतृत्व में जो अहिंसात्मक आन्दोलन चल रहा था, युवा पीढी उससे असंतुष्ट थी। धीरे धीरे राजनीतिक क्षेत्र में वामपंथी शक्तियाँ प्रबल होने लगी। दूसरे विश्वयुद्ध और बंगाल के अकाल से भारत की स्थिति और भी विकराल हो गयी। साहित्य भी इन परिस्थितियों से प्रभावित हुआ। 1935 में पारिस में प्रगतिशील लेखन संघ की स्थापना हुई। 1936 में इस संघ की शाखा भारत में खोली गयी। इसका प्रथम अधिवेशन लखनऊ में प्रेमचन्द की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। पन्त, निराला जैसे छायावाद के अग्रणी कवि भी प्रगतिशलि विचारों से प्रभावित होकर सामाजिक यथार्थ परक कवितायें लिखीं।

5. प्रगतिवादी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ क्या क्या हैं?

प्रगतिवाद रचना और आलोचना के क्षेत्र में सर्वथा नया दृष्टिकोण लेकर आया। इसने साहित्य को सोद्देश्य माना। शोषक शक्तियों का उन्मूल नाश करके शोषण रहित समाज की स्थापना का महान उद्देश्य इस साहित्य में निहित है। अतः इसकी प्रमुख प्रवृत्तियाँ भी इसके आधार पर है।

1. रूढियों का विरोधः

प्रगतिवाद धर्म तथा ईश्वर की सत्वा पर विश्वास नहीं रखता। उसकी दृष्टि में मानव ही सर्वोपरि है। अतः प्रगतिवादी कवि धर्म तथा धार्मिक विश्वासों का विरोध करते हैं। अंधविश्वासों, मिथ्या परंपराओं और रूढियों पर प्रखर प्रहार करके वे मानव को मानव के रूप में देखते हैं।

2. शोषितों से सहानुभूतिः

प्रगतिवादी कवि शोषण के शिकार मज़दूरों, किसानों एवं गरीबों की दशा का सहानुभूतिपरक कारुणिक चित्र प्रस्तुत करते है। 'वह तोडती पत्थर' कविता में निराला कठिन धूप में बैठकर पत्थर तोडनेवाली औरत का चित्र यों प्रस्तुत करते है-

कोई न छायादार

पेड वह जिसके तले बैठी हुई

तन नयन, प्रिय कर्मरत मन

गुरु हथौडा हाथ

करती बार बार प्रहार।

3. शोषकों के प्रति घृणा तथा रोषः

प्रगतिवाद के अनुसार समाज दो जातियों में विभाजित हैं- शोषक और शोषित। जब तक ज़मीन्दार, पूंजीपति जैसे शोषकों का अधिकार होगा, तब तक शोषण का अन्त संभव नहीं। प्रगतिवादी कवि सामाजिक असमानता का चित्रण करके शोषक वर्ग के प्रति आक्रोश व्यक्त करते है। सामाजिक विषमता के उत्तरदायी शोषक का असली चित्र कवि निराला अपनी 'कुकुरमुत्ता' कविता में प्रस्तुत करते है। गुलाब को शोषक वर्ग का प्रतीक बनाकर कवि कहते है-

अबे सुन बे गुलाब

भूल मत जो पायी

ख़ुशबू रंग ओ आब

ख़ून चूसा ख़ाद का

तूने अशिष्ट

डाल पर इतरा रहै है capitalist

कितनो को तूने बनाया है गुलाम।

4. क्रान्ति की भावनाः

साम्यवादी व्यवस्था की प्रतिष्ठा के लिए सामन्तवादी, पूंजीवादी परंपराओं का समूल नाश आवश्यक है। प्रगतिवादी सिद्धान्त के अनुसार सामाजिक असमानता को मिटाने के लिए क्रान्ति अनिवार्य है। प्रगतिवादी कवि पुरानी व्यवस्था को नष्ट भ्रष्ट करने के लिए क्रान्ति का आह्वान करते हैं। पन्तजी के शब्दों में :

आ कोकिल बरसा पावक कण

नष्ट भ्रष्ट हो जीर्ण पुरातन।

5. मानवतावाद:

प्रगतिवादी कवि शोषित मानवता की मुक्ति चाहनेवाले हैं। समाज के समस्त मानव का उद्धार उनका लक्ष्य है। उनकी कविताओं में व्यापक मानवतावाद का चित्र दिखायी पडता है। किसान, मज़दूर के समान शोषित नारी के प्रति भी उनकी सहानुभूति कविताओं में दृष्टव्य है। युग युग से गुलामी की श्रृंखला में पडी नारी की मुक्ति का आह्वान करके पन्तजी कहते है-

मुक्त करो नारी को मानव

चिर बन्दिनी नारी को

युग युग की बर्बर कारा से

जननी, सखी, प्यारी को।

6. शैलीगत विशेषतायें:

प्रगतिवादी कविता की शैली विषयानुकूल है। कवि का लक्ष्य जनता के साथ संबंध स्थापित करना तथा प्रगति का संदेश उनके बीच पहुँचाना था। इसके लिए कवियों ने स्पष्ट सामान्य तथा प्रचलित भाषा को अपनाया। जनजीवन से उन्होंने बिंबों और प्रतीकों को स्वीकार किया। प्रगतिवाद के साथ हिन्दी में एक जीवन्त भाषा का उदय हुआ। भाव, भाषा, छन्द, अलंकार सभी की स्वाभाविक प्रगति हुई। प्रगतिवादी कविता जनसाधारण के लिए थी। अतः कवियों ने कलापक्ष में सभी आडंबरों को त्याग दिया। पन्त ने लिखा-

तुम बहन कर सको, जन मन में मेरे विचार

वाणी मेरी चाहिए, क्या तुम्हें अलंकार?

अपनी सभी कमियों के बावजूद प्रगतिवाद ने हिन्दी कविता के विकास में एक महत्वपूर्ण मोड उपस्थित किया। उसने साहित्य को जनता के बीच लाकर खडा किया।

V हिन्दी के प्रमुख प्रगतिवादी कवियों का परिचय दीजिए:

छायावाद के कवि सुमित्रानंदन पन्त, और सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला प्रगतिपूर्ण विचारों से प्रभावित होकर इस काव्यधारा से जुडकर कवितायें लिखी। युगान्त, युगवाणी ग्राम्या आदि संग्रहों में पन्त के प्रगतिपूर्ण विचार व्यक्त है तो कुकुरमुत्ता, तोडती पत्थर जैसी कवितायें निराला के प्रगतिपूर्ण विचारों का परिचायक है। मार्क्सवादी सिद्धान्तों पर आधारित प्रगतिवादी कवितायें लिखनेवालों में नागार्जुन, त्रिलोचन केदारनाथ अग्रवाल आदि प्रमुख हैं।

नागार्जुन:

नागार्जुन प्रगतिवादी काव्यधारा के अग्रणी कवि है। उनका असली नाम वैद्यनाथ मिश्र है। कवि के अलावा वे सफल उपन्यासकार भी है। यात्री नाम से वे मैथिली भाषा में रचनायें करते थे। युगधारा, सतरंगे पंखोंवाली, हज़ार हज़ार बाहोवाली, तुमने कहा था पुरानी जूतियों का कोरस आदि नागार्जुन के प्रमुख काव्य संग्रह हैं। संग्रहों की कविताओं में गरीबों का जीवन संघर्ष तथा शोषण के विरुद्ध क्रान्ति का आह्वान है। नागार्जुन की कविता के मूल में मार्क्सवाद के प्रति उनकी आस्था प्रकट है। उनकी कविताओं में स्वतंत्रतापूर्व और स्वातंत्र्योत्तर भारत की राजनीतिक तथा सामाजिक परिस्थितियों का यथार्थ अंकन हुआ है। उनकी कविता में व्यंग्य की प्रधानता है। सामाजिक तथा राजनीतिक विसंगतियों और विद्रूपताओं पर नागार्जुन की कविता कठोर व्यंग्य करती है।

त्रिलोचन शास्त्री:

हिन्दी के प्रगतिवादी कवियों में त्रिलोचन शास्त्री का अमर स्थान है। उनकी कविताओं में प्रकृति, प्रेम और समाजवाद-तीनों की अभिव्यक्ति मिलती है। 'धरती' उनका प्रमुख काव्यसंग्रह है। उनकी कवितायें मिट्टी की गंध से भरपूर है। वे सच्चे अर्थ में जनपद के कवि है। सामाजिक यथार्थ के अलावा वैयक्तिक अनुभूतियों को भी त्रिलोचन ने कविता का विषय बनाया है। हिन्दी में वे सोनेट के कवि के रूप में भी विख्यात है। 'दिगन्त' संग्रह में उनके सोनेट संग्रहीत हैं।

केदारनाथ अग्रवाल:

केदारनाथ अग्रवाल का काव्यजीवन छायावादी पृष्ठभूमी में शुरू होता है। उनकी प्रारंभिक कवितायें सौदर्य और प्रणायानुभूति से भरी है। बाद में मार्क्सवाद से आकृष्ट होकर उन्होंने सामाजिक यथार्थपरक कवितायें लिखीं। नींद के बादल, युग की गंगा, फूल नहीं रंग बोलते है, आग का आइना, पंख और पतवार आदि उनके उल्लेखनीय काव्य संग्रह हैं। अपनी कविताओं के द्वारा उन्होंने समाज में प्रचलित रूढियों और अंधविश्वासों का कठोर विरोध किया। युग की गंगा में जीवन की विसंगतियों के प्रति आक्रोश का स्वर मुखरित हुआ है। उनकी कविता में ग्रामीण जीवन की वास्तविकताओं का चित्रण

हुआ है। अग्रवालजी की कवितायें भाषा शैली की दृष्टि से भी अलग पहचान रखनेवाली हैं। सरल और स्पष्ट भाषा में लिखी ये कवितायें पाठकों को सहज ही प्रभावित करती है।

प्रयोगवाद तथा नयी कविता

I प्रयोगवाद के उद्भव का कारण क्या था?

छायावाद अपनी अतिशय कल्पना और भावुकता के कारण साहित्यिक क्षेत्र में अधिक समय टिक नहीं पाया और प्रगतिवाद अपनी कठोर यथार्थवाद के कारण जल्दी ही अनाकर्षक सिद्ध हुआ। ऐसी स्थिति में कुछ नये साहित्यकारों ने इन दोनों काव्य प्रवृत्तियों की कमियों को दूर करके एक नयी काव्यधारा को प्रस्तुत करना चाहा। 1943 में अज्ञेय के संपादकत्व में प्रकाशित तारसप्तक के द्वारा इस उद्देश्य की पूर्ति हुई।

II हिन्दी काव्य के विकास में तारसप्तक की भूमिका क्या थी?

सन् 1943 में अज्ञेय के संपादकत्व में तारसप्तक नामक काव्यसंग्रह का प्रकाशन हुआ। तारसप्तक ने हिन्दी काव्य जगत में एक नये युग का सूत्रपात किया। इस संग्रह में अज्ञेय के अलावा गजानन माधव मुम्तिबोध, नेमीचन्द्र जैन, भारत भूषण अग्रवाल, गिरिजाकुमार माथुर, प्रभाकर माचवे और रामविलास शर्मा की कवितायें भी संग्रहीत थी। तारसप्तक की भूमिका में अज्ञेय ने लिखा कि ये सात कवि काव्य के क्षेत्र में नए प्रयोग करना चाहते हैं। विषय और शिल्प के क्षेत्र में नए प्रयोग अपनानेवाले इन कवियों की काव्य प्रवृत्तियों को प्रयोगवाद नाम मिला।

III प्रयोगवाद कैसे नयी कविता में परिणत हुआ?

सन् 1951 में अज्ञेय ने दुसरा सप्तक प्रकाशित किया। इसमें भी सात कवि मौजूद थे- भवानी प्रसाद मिश्र, धर्मवीर भारती, शमेशेर बहादूर सिंह, रघुवीर साहय, नरेश मेहता, शकुन्त माथुर और हरिनारायण व्यास। दूसरा सप्तक के प्रकाशन से प्रयोग की स्थिति निश्चित हो गयी। इस समय तक आते अज्ञेय ने इस नयी काव्यधारा को नयी कविता नाम दिया। धीरे धीरे प्रयोगवाद नयी कविता के नाम से प्रसिद्ध हुआ। 1959 में तीसरा सप्तक प्रकाशित हुआ। इसका संपादन भी अज्ञेय ने किया। इसमें सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, विजयदेव नारायण साही, केदारनाथ सिंह, कुंवर नारायण, मदन वात्स्यायन, कीर्ति चौधरी और प्रयाग नारायण त्रिपाठी की कवितायें संकलित थीं। सप्तकों के अतिरिक्त इस बीच जगदीश गुप्त, लक्ष्मीकान्त वर्मा, श्रीकान्त वर्मा आदि कवियों ने भी नयी कविता के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

3. प्रयोगवादी नयी कविता का विकास कैसे संपन्न हुआ?

1943 में अज्ञेयजी के नेतृत्व में शुरू हुई काव्य प्रवृत्तियों को पहले प्रयोगवाद नाम दिया गया था। 1951 तक आते आते इस काव्य धारा के लिए नयी कविता नाम स्वीकृत हो गया। विकास के इस शिलसिले में शुरूआत की कमियाँ दूर हो गयी। नयी कविता तक आते आते विषय और शैली की दृष्टि से कई परिवर्तन लक्षित हुए। प्रयोगवाद और नयी कविता की मूल चेतना, काव्य संबंधी दृष्टिकोण तथा शैली लगभग एक ही है। दोनों काव्यधारा के कवि भी एक ही है। अतः दोनों को अलग करना संभव नहीं। अतः नयी कविता प्रयोगवाद का सहज विकास है। अज्ञेय के इस उद्यम से प्रेरणा पाकर नलिनविलोचन शर्मा, केसरी कुमार और नरेश ने मिलकर नकनेवाद की स्थापना की जो प्रपद्यवाद नाम से भी जाना जाता है। 1954 में जगदीश गुप्त ने नयी कविता शीर्षक से अर्धवार्षिक पत्रिका निकाली। इसमें कई नए कवियों को परिचित कराने के साथ साथ कविता के विभिन्न पक्षों पर गंभीरतापूर्ण विचार भी प्रकाशित होने लगे। धीरे धीरे प्रयोगवादी कविता सप्तकों के परे विकसित होने लगी और उसका क्षेत्र व्यापक हो गया।

IV प्रयोगवादी नयी कविता की विषयगत प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए।

प्रयोगवादी नयी कविता की काव्य प्रवृत्तियों पर भारतीय ही नहीं, यूरोपीय काव्य प्रवृत्तियों का भी प्रभाव दिखायी पडता है। यह काव्यधारा यूरोप के अस्तित्ववाद, फ्रायडवाद, प्रतीकवाद, बिंबवाद आदि से प्रभावित है। इसकी विषयगत प्रवृत्तियाँ इस प्रकार हैः-

1. अहंनिष्ठ व्यक्तिवादः

छायावादी कविता में व्यक्तिवाद की प्रधानता थी तो प्रगतिवाद में सामाजिक बोध पर बल दिया गया था। प्रयोगवादी नयी कविता में व्यक्ति पर बल दिया गया था। प्रयोगवादी नयी कविता में व्यक्ति और समाज का समन्वय दिखायी पडता है। प्रयोगवादी नयी कविता का व्यक्ति समाज को मान्यता देकर भी अपना व्यक्तित्व खोना नहीं चाहता। समाज का अंग रहते हुए भी वह अपना अस्तित्व, अपना अहं छोडना नहीं चाहता। अज्ञेय की कविता नदी के द्वीप इसका उदाहरण है। कविता का द्वीप अपने को नदी का अंग स्वीकार करते हुए भी नदी के साथ बहना नहीं चाहता। उसके अनुसारः-

किन्तु हम है द्वीप

हम धारा नहीं है

स्थिर समर्पण है हमारा,

हम सदा से द्वीप है स्रोतास्विनी के

किन्तु हम बहते नहीं

क्योंकि बहना रेत होना है।

2. अति नग्न यथार्थवाद:

प्रयोगवादी नयी कविता में फ्रायड के मनोविश्लेषणवाद का प्रभाव है। अतः प्रेम के उदात्त रूप के स्थान पर इसमें वासना को अधिक प्रधानता देता दिखायी पडता है। दमित वासनाओं को ये कवि निःसंकोच प्रस्तुत करते है।

3. बौद्धिकता:

आधुनिक मानव सोचता है, तर्क करता है और प्रत्येक प्रश्न का बौद्धिक समाधान चाहता है। प्रयोगवादी नये कवियों ने भावना की अपेक्षा बुद्धि को अधिक स्थान दिया। अज्ञेय की ये पंक्तियां इसका उदा: है:-

"कौंच बैठा हो यदि वल्मीक पर

तो मत समझ कि

वह अनुष्टुप बांच रहा है संगीनी के स्मरण के

वह तो दीमको की टोह में है।"

4. लघु मानव की प्रतिष्ठा:

पहले कवियों ने आदर्श महामानव को कविता का नायक बनाया था। लेकिन प्रयोगवादी नयी कविता में क्षुद्र और उपेक्षित व्यक्ति को कविता में स्थान मिला। कवियों ने महामानवों के स्थान पर लघु मानव को केन्द्र में रखा, जो अनेक कमज़ोरियों से युक्त है और जीने के लिए बहुत संघर्ष झेलते हैं। धर्मवीर भारती की कविता 'टूटा पहिया' में कवि उपेक्षित और क्षुद्र मानव को केन्द्र में लाने का प्रयास करते है।

5. नया सौदर्य बोध:

नए कवियों ने आधुनिक युग के अनुकूल नया सौदर्यबोध प्रस्तुत किया। सुन्दर और असुन्दर का अन्तर समाप्त करके उन्होंने सुन्दर को भी असुन्दर तथा असुन्दर को सुन्दर रूप में चित्रित किया। अज्ञेय ने एक गधे का चित्र यों प्रस्तुत किया; जो दीन हीन दुर्बल आदमी का प्रतीक है-

'मूत्र सिंचित मृत्तिका के वृत्त में

तीन टांगो पर खडा नत ग्रीव टांगों

धैर्य धन गदहा'

मुक्तिबोध ने सौदर्य का प्रसिद्ध उपमान चांद को असुन्दर रूप में चांद का मूँह टेढा है कविता में प्रस्तुत किया।

6. अस्तित्व बोध:

प्रयोगवादी कविता में अस्तित्ववादी दर्शन का प्रभाव है। अस्तित्ववाद के अनुसार मनुष्य की अपनी इच्छा ही सबसे महत्वपूर्ण है। वह धर्म, समाज और परंपरा को स्थान नहीं देता। स्वेच्छा से जिया हुआ एक क्षण कवि के लिए सबसे महत्वपूर्ण है। कवि इस अद्वितीय क्षण में जीना पसन्द करता है।

7. आधुनिकताबोध:

आधुनिकता नयी कविता की आत्मा है। इस काव्यधारा में वैज्ञानिकता से उत्पन्न परिवर्तनों का प्रभाव दिखायी पडता है। आधुनिक वैज्ञानिक युग में परंपरागत मूल्यों में बडा परिवर्तन आया। गिरिजा कुमार माथुर की कविता अगस्त पन्द्रह इस जटिल भाव बोध को हमारे सामने उपस्थित करती है-

आज जीत की रात पहरिये, सावधान रहना

ऊंची रहे मशाल हमारी, आगे कठिन डगर है

शत्रु हार गया लेकिन उसकी छायाओं का डर है।

8. विषय की आधारणता:

प्रयोगवादी नए कवि महान विषय से ज्यादा जीवन के अति साधारण विषयों को महत्व देते है। अपने चारों ओर की साधारण बातों को लेकर उन्होंने कवितायें लिखी, जैसे चूडी का टुकडा, चाय का प्याला आदि।

इस प्रकार प्रयोगवादी नयी कविता ने हिन्दी काव्य जगत में बहुत बडा परिवर्तन उपस्थित किया।

V प्रयोगवादी नयी कविता की शिल्पगत विशेषतायें क्या क्या?

प्रयोगवादी नए कवि शिल्प के क्षेत्र में नए नए प्रयोग किये। युग की नयी मानसिकता को अभिव्यक्त करने के लिए इन्होंने नये प्रतीकों, नये बिंबों और नये उपमानों की खोज की। अज्ञेय की 'कलगी बाजरे की' कविता में अपनी प्रेमिका के संबोधन के लिए मैले उपमानों को छोडकर कवि बाजरे की कलगी का नया उपमान चुनते है। नये कवियों ने भाषा को जीवन के निकट लाना चाहा। उन्होंने पुराने शब्दों में नया अर्थ भरकर प्रयोग किया। भवानी प्रसाद मिश्र जैसे कवियों ने बोलचाल की भाषा को अपनाया। उन्होंने लिखा- जैसे हम बोलते हैं, वैसे तू लिखा नयी कविता में व्यंग्य की प्रधानता है।

सामाजिक बुराइयों पर नये कवियों ने व्यंग्य किया। अज्ञेय की कविता सांप में आधुनिक मानव पर कवि व्यंग्य करते है-

"सांप तू सभ्य तो हुए नहीं, न होगे

नगर में बसना भी तुम्हें नहीं आया

फिर कैसे सीख्रा डंसना?

विष कहां पाया?

नये कवियों ने संगति का बहिष्कार किया। उसमें गद्य की लय मिलती है।

VI प्रयोगवादी नयी कविता के प्रमुख कवियों का परिचय दीजिए:

1. सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय:

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय ने तारसप्तक के संपादन के द्वारा प्रयोगवादी काव्य परंपरा का प्रवर्तन किया। बाद में उन्होंने तीन और सप्तकों का भी संपादन किया। भंग्नदूत' चिन्ता, इत्यलम, हरी घास पर क्षण भर, बावरा अहेरी, इन्द्रधनु रौदे हुए ये, आंगन के पार द्वार आदि अज्ञेय की प्रमुख काव्य कृतियां हैं। अज्ञेय की कविताओं में प्रकृति चित्रण की प्रधानता है। प्रकृति उनके लिए आत्मान्वेषण का माध्यम भी है। जो उनका रहस्यवाद है। अज्ञेय ने अपनी कविता में अतिसाधारण विषयों को भी स्थान दिया है। अज्ञेय की कविता में व्यक्ति की प्रधानता है। इससे आलाचकों ने उन्हें अहंवादी माना है। नदी के द्वीप नामक उनकी कविता में व्यष्टि और समष्टि का समन्वय दिख्राया गया है। हिन्दी कविता में उन्होंने कई नये प्रयोग किया है। नये प्रतीकों, नये बिंबों, उपमानों नये शब्दों और शब्दों में नये अर्थों को देकर अज्ञेय ने हिन्दी कविता को गतिशील बनाया। कितनी नावों में कितनी बार संग्रह के लिए उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ।

2. गजानन माधव मुक्तिबोध:

गजानन माधव मुक्तिबोध प्रयोगवादी काव्यधारा के सामाजिक चेतना के कवि है। उनके दो काव्यसंग्रह प्रकाशित हैं- चांद का मुँह टेढा है और भूरी भूरी ख्राक धूल। इन दो ही काव्यसंग्रहों के द्वारा मुक्तिबोध ने हिन्दी काव्य जगत में अमर स्थान प्राप्त किया है। मुक्तिबोध का व्यक्तित्व संघर्षशील है, जो उनकी कविता की ऊर्जा है। उनका जीवन और कविता जनता के लिए समर्पित है। कविता के प्रति मुक्तिबोध की दृष्टि स्वस्थ है। वे हर कहीं कविता देख्रते है: उन्होंने लिख्रा:-

"हर एक छाती में आत्मा अधीरा है

प्रत्येक सुस्मित में विमल सदनीरा है

मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक वाणी में

महाकाव्य-पीडा है"

अंधेरे में, ब्रह्मराक्ष, आदि लंबी कवितायें मुक्तिबोध की प्रसिद्ध का आधार है। इन कविताओं में उन्होंने फैंटसी शैली का प्रभावात्मक प्रयोग किया है। भाषा की ओज, बिंबों की सजीवता और प्रतीकों की सार्थकता, मुक्तिबोध की काव्यगत विशेषतायें है। कविता के अलावा मुक्तिबोध ने काव्य संबंधी अपने विचारों को व्यक्त करके कई निबंध भी लिखे हैं। ये निबंध प्रयोगवादी नयी कविता को समझने में सहायक हैं।

3. शमशेर बहादुर सिंह:

शमशेर बहादुर सिंह बिंबों के कवि के रूप में काफी मशहूर है। बिंबों के प्रयोग में वे अद्वितीय है। उन्होंने कई गज़लें भी लिखी हैं। कुछ कवितायें; कुछ और कवितायें, इतने पास आदि काव्य संग्रहों के द्वारा उन्होंने नयी कविता को विकास की ओर अग्रसर कराया।

4. नरेश मेहता:

दूसरा सप्तक के कवियों में नरेश मेहता का अग्रणी स्थान है। पौराणिक संदर्भों को आधुनिक रूप में प्रस्तुत करने में वे सफल हुए है। रामायण के संदर्भों को लेकर उन्होंने तीन काव्य रचे है- प्रवादपर्व, संशय की एक रात और शबरी। महाप्रस्थान, वनपांखी सुनो आदि उनकी प्रतिभा का परिचायक है। उनकी कविताओं में भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिक तत्वों पर विशेष बल दिया गया है।

5. धर्मवीर भारती:

नयी कविता के क्षेत्र में धर्मवीर भारत की अलग पहचान है। ठंडा लोहा, सात गीत वर्ष, अंधायुग कनुप्रिय आदि उनकी प्रसिद्ध काव्य कृतियां हैं। अंधायुग में उन्होंने युद्ध और शान्ति की समस्याओं पर विचार किया तो कनुप्रिया में राधाकृष्ण के वासनात्मक प्रेम संबंधों को आध्यात्मिक धरातल पर पहुँचाया है। अनुभूति की गहराई और अभिव्यक्ति की सजीवता उनकी रचनाओं की खासियत है।

6. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना:

सर्वेश्वर दगयाल सक्सेना तीसरा सप्तक का उल्लेखनीय कवि है। उनकी कवितायें समकालीन राजनीतिक सामाजिक जीवन की विसंगतियों और विद्रूपताओं का अनावरण करती है। काठ की घंटियाँ, एक सूनी नाव, गर्म हवायें, कुआनों नदी आदि संग्रहों के द्वारा उन्होंने जीवन और साहित्य के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण किया है।

7. केदारनाथ सिंहः

भाषा और भाव के सूक्ष्म पक्षों पर विचार करनेवाले नये कवियों में केदारनाथ सिंह का अद्वितीय स्थान है। ज़मीन पक रही है, अभी बिल्कुल अभी आदि संग्रहों की कविताओं में उन्होंने समकालीन जीवन को निकट से देखकर उन पर अपना विचार प्रकट किया है।

इन कवियों के अलावा प्रयाग नारायण त्रिपाठी, हरिनारायण व्यास, जगदीश गुप्त, दुष्यन्त कुमार, श्रीकान्त वर्मा आदि कवियों ने नयी कविता को नयी दिशा देने में अपना योगदान दिया है। कीर्ति चौधरी और शकुन्त माथुर प्रयोगवादी नयी कविता की श्रेष्ठ लेखिकायें हैं।

VII. नयी कविता की उपलब्धियां क्या- क्या है?

डॉ. नगेन्द्र के अनुसार नयी कविता की पहली विशेषता जीवन के प्रति उसकी आस्था है। वर्तमान में जीने की लालसा नयी कविता में मिलती है। लघु मानव की प्रतिष्ठा इस कविता की सकारात्मक प्रवृत्ति है। आधुनिक वैज्ञानिक युग के अनुकूल नये कवियों ने बुद्धिवादी और यथार्थवादी दृष्टि अपनायी। इसलिए इन कवियों ने अनुभूति की सच्चाई पर जोर दी। नये कवियों का जीवन दर्शन व्यष्टि और समष्टि के समन्वय पर आधारित है। शिल्प की दृष्टि से भी नयी कविता की महत्वपूर्ण देन है। सीधी सादी शैली को अपनाकर इन कवियों ने काव्यशैली में नवीनता उपस्थित की। आधुनिक युग के अनुकूल प्रतीकों, अलंकारों और बिंबों का प्रयोग इन्होंने किया। काव्यभाषा इस समय बोलचाल के निकट आ गयी। इस प्रकार हिन्दी कविता के विकास में नयी कविता का योगदान महत्वपूर्ण है। बाद के कई काव्यन्दोलनों में नयी कविता की प्रेरणा और प्रभाव दृष्टिगत होता है।

VIII. साठोत्तर हिन्दी काव्यान्दोलनों का संक्षिप्त परिचय दीजिएः

सन् 1960 का समय भारतीय साहित्य के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मील पत्थर है। साठ तक आते आते भारत को आज़ादी मिले तेरह वर्ष बीत चुके थे। लेकिन इस समय तक देश में कोई उल्लेखनीय परिवर्तन दृष्टिगत नहीं हुआ। देश की युवा पीढी इससे निराश हुई। उनका क्षोभ, मोहभंग आदि रचनात्मक क्षेत्र में अभिव्यक्त होने लगा। साठोत्तर हिन्दी कविता में इन परिस्थितियों के प्रभाव से कई काव्यान्दोलन विकसित हुए। अकविता, जनवादी कविता, सनातन पंथी कविता, युयुत्सावादी कविता, अस्वीकृत कविता आदि कई नामों में कई आन्दोलन संपन्न हुए। लघु पत्रिकाओं के माध्यम से विकसित इन काव्यान्दोलनों में अधिकांश तो अल्पायु निकले। लेकिन कुछ तो चार पाँच साल तक बना रहा। आधारभूत प्रेरणा के आधार पर डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त ने इन काव्यान्दोलनों को तीन वर्गों में बांटा है- निषेध मूलक कविता, संघर्षमूलक कविता और आस्था मूलक कविता। निषेधमूलक कविता ने परंपरागत सामाजिक सांस्कृतिक तथा नैतिक मूल्यों का निराकार करके धोर व्यक्तिवाद, उच्छृंखल यौनवाद तथा नग्न भोगवाद को अपनाया। संघर्षमूलक काव्यान्दोलनों में देश की सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक

परिस्थितियों के प्रति विरोध प्रकट करके उनके विरुद्ध संघर्ष करने का स्वर मुखरित हुआ। आस्थामूलक वर्ग के कवियों ने परंपरागत मूल्यों को स्वीकार करते हुए उनकी पुनःप्रतिष्ठा पर बल दिया।

2. निषेधमूलक आन्दोलन की प्रेरणा क्या थी?

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद यूरोप और अमेरिका के साहित्य क्षेत्र में anti poetry के रूप में अनेक काव्यान्दोलन आये जो पूर्णतया निषेधात्मक दृष्टिकोण पर आधारित था। इसमें कवियों ने अपने समाज की परंपरागत मान्यताओं नैतिक आदर्शों और मर्यादाओं का खुलकर विरोध किया। अमेरिका के बीट जनरेशन के प्रवर्तक एलन गिल्सबर्ग 1962-63 के आसपास भारत आया। बीट जनरेशन का प्रभाव बंगला के साहित्य पर पडा। वहाँ निषेध मूलक कविता के रूप में भूख्री पीढी नामक काव्यान्दोलन की शुरुआत हुई। बंगला के माध्यम से हिन्दी कविता में बीट जनरेशन का प्रभाव पडा। हिन्दी में निषेधमूलक काव्य विद्रोही पीढी, अभिनव काव्य, बीट कविता, अकविता आदि कई नामों के आन्दोलनों के रूप में विकसित हुआ।

3. अकविता आन्दोलन के उद्‌भव और विकास पर प्रकाश डालिएः

सन् 1963 में जगदीश चतुर्वेदी के संपादकत्व में प्रारंभ शीर्षक काव्यसंग्रह प्रकाशित हुआ। इसमें उन्होंने अपनी कविता के लिए अभिनव काव्य शब्द प्रयुक्त किया था। 1964 में अभिनव काव्य के लिए एक नया नाम एंटी पोयट्री (Anti poetry) या अकविता नाम स्वीकार किया। 1965 में श्याम परमार के संपादन में अकविता पत्रिका का आरंभ हुआ। तब से लेकर अकविता नाम स्थिर हो गया। 1973 में जगदीश चतुर्वेदी ने निषेध नामक काव्य संकलन प्रकाशित किया। अकविता शब्द अस्वीकृत या निषेधमूलक कविता के अर्थ में होता था। जो कविता स्वीकृत मान्यताओं के अनुसार नहीं है, वही अकविता है। जगदीश चतुर्वेदी, श्याम परमार, कैलाश वाजपेयी, गंगाप्रसाद विमल आदि के साथ साथ मोना गुलाटी, मणिका मोहिनी आदि कवयित्री भी इस आन्दोलन से जुडे। इनके अलावा गिरिजा कुमार माथुर भारत भूषण अग्रवाल, प्रभाकर माचवे आदि नयी कविता के कुछ प्रतिष्ठित कवि भी अकविता आन्दोलन से जुडे।

4. अकविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ क्या क्या है?

1) निषेध का स्वरः अकविता में निषेध का स्वर सर्वत्र मिलता है। अकवियों ने धर्म, संस्कृति, समाज एवं नैतिकता से संबंधित सभी परंपरागत मूल्यों को अस्वीकार किया। जिन तत्वों को तब तक महान समझा जाता था, उन सबको नगण्य मानकर इन कवियों ने अत्यन्त घृणात्मक रूप में इनका चित्रण किया। देश और देशप्रेम के प्रति भारतीयों के मन में आदर और श्रद्धा का भाव था, उसको जगदीश चतुर्वेदी ने यों चित्रित किया:-

देश - एक लंगडाता वृद्ध मरीज

देशप्रेम - एक ऐयाशी का दिया हुआ मोहमंत्र।

2) लोकतंत्र का विरोधः सभी प्रकार की व्यवस्था से विरोध रखनेवाले अकवियों ने लोकतांत्रिक व्यवस्था के प्रति अपना रोष प्रकट किया। जगदीश चतुर्वेदी के अनुसार- "मुझे तानाशाही से लगाव है, जनतंत्र के रिरियाते गीदड से नहीं।"

3) उच्छृंखल भोगवादः अकवियों की रचनाओं में उच्छृंखल भोगवाद और यौनवाद की प्रवृत्ति पायी जाती है। उनकी दृष्टि में नारी केवल वासना पूर्ति का साधन मात्र है। अकविता से जुडी कवयित्रियों ने भी स्त्री पुरुष संबंधों का उन्मुक्त वर्णन किया।

4) महानाश में प्रसन्नताः अकवियों की कविता में आत्मघात के साथ साथ समस्त मानवता के महानाश की कामना भी विद्यमान है। 'इतिहास हन्ता' में जगदीश चतुर्वेदी ने लिखाः मै चाहता हूँ विनाश इन कीडों से मानव पिंडों के लिए मेरे मन में कोई दया नहीं।

5) कविता के प्रति हेय दृष्टिकोणः

अकविता के कवियों को कविता के प्रति कोई गंभीर दृष्टिकोण नहीं है। उनके लिए कविता केवल मनोरंजन की वस्तु है। उसमें जीवन के स्थायी तत्वों के लिए कोई स्थान नहीं। उनके अनुसार कविता के जरिये क्रान्ति होना नामुमकिन है। इस प्रकार अकविता में जीवन के प्रति कोई स्वस्थ दृष्टिकोण या पाठकों को देने के लिए कोई उच्च आदर्श नहीं। यही नहीं ख्याति प्राप्त करने की इच्छा से प्रेरित होकर अकवियों ने साहित्य के क्षेत्र को दूषित एवं विकृत भी किया है।

5. संघर्ष मूलक कविता की विशेषतायें क्या क्या है?

सातवें दशक तक आते आते हिन्दी कविता में और भी कई परिवर्तन दिखायी पडने लगे। निषेधमूलक कविता के साथ साथ संघर्ष मूलक आन्दोलन भी जोर पकडने लगा। समाज की प्रतिकूल परिस्थितियों में प्रवृत्त होकर कवियों ने इसके विरुद्ध संघर्ष करना उचित माना। अतः इन कवियों ने समाज से कटकर नहीं, जुडकर कवितायें लिखीं। इन्होंने सामाजिक अन्याय, अत्याचार, भ्रष्टाचार, अव्यवस्था आदि के विरुद्ध संघर्ष की भावना अभिव्यक्त की। इस वर्ग की कविता के लिए समय समय पर जनवादी कविता, युयुत्सावादी कविता, नवप्रगतिशील कविता, वाम कविता, प्रतिबद्ध कविता आदि कई नाम प्रचलित हुए। इनमें कुछ को मार्क्सवाद या साम्यवाद से संबंध है, लेकिन सीधा संबंध नहीं। आगे चलकर अनेक साम्यवादी मार्क्सवादी प्रगतिवादी कवि इस काव्यधारा से जुडे और इसके लिए वाम कविता नाम स्वीकार किया गया।

6. आस्थामूलक काव्यान्दोलन की प्रमुख काव्यधारायें क्या क्या है?

प्रयोगवाद तथा अकविता आन्दोलन की अनास्था मूलक प्रवृत्तियों का निराकार करते हुए सातवे दशक में कई काव्यान्दोलन आगे आये। उनमें सनातन सूर्योदयी कविता, सहज कविता आदि का नाम विशेष उल्लेखनीय है। सनातन सूर्योदयी कविता का प्रवर्तन 1962 में वीरेन्द्र जैन ने किया था। इसका लक्ष्य पूर्ववर्ती कविता की अनास्था मूलक प्रवृत्तियों को दूर करके आस्थावादी दृष्टिकोण का प्रचार करना था। 1967 में रवीन्द्र भ्रमर के नेतृत्व में सहज कविता का प्रवर्तन हुआ। आस्थामूलक प्रवृत्तियों की

प्रतिष्ठा करके इसने हिन्दी काव्य को एक स्वस्थ, संतुलित एवं सही दिशा प्रदान करने की कोशिश की। सहज कविता से जुडे कवियों ने जीवन के सभी पक्षों का चित्रण सहज और स्वाभाविक रूप में किया। लेकिन दो तीन सालों के अन्दर आस्थामूलक काव्यान्दोलन का प्रचार कम हो गया।

7. विचार कविता आन्दोलन की प्रमुख प्रवृत्तियाँ क्या क्या है?

1973 में संचेतना पत्रिका के द्वारा विचार कविता का प्रवर्तन हुआ। डॉ.महीप सिंह, बलदेव वंशी, नरेन्द्र मोहन, रामदरश मिश्र आदि इस काव्यधारा के प्रमुख कवि हैं। इस कविता में भाव और कल्पना की अपेक्षा विचार की प्रमुखता है। यह सोचते हुए मन की कविता है। यह किसी विशेष विचारधारा से बंधी नहीं है। इसमें कवियों के निजी बोध पर आधारित तत्वों की अभिव्यक्ति की गयी। नयी कविता, अकविता, प्रतिबद्ध कविता या सहज कविता के कई कवि इस काव्यधारा के साथ जुडे। जीवन और समाज के प्रति स्वस्थ और सकारात्मक दृष्टिकोण विचार कविता की मुख्य प्रवृत्ति है। भावना और कल्पना के स्थान पर इन कवियों ने वैचारिक आधार को प्रमुखता दी। विचार कविता के कवि अपने समाज और समकालीन जीवन से पूरी तरह जुडे हुए हैं। समकालीन परिस्थितियों का बौद्धिक विश्लेषण करते हुए इन कवियों ने जीवन की विसंगतियों को व्यंग्यात्मक रूप में चित्रित किया। विचार कविता के कवि शहरों में रहनेवाले थे। अतः शहरों के मध्यवर्ग की ज़िन्दगी का चित्रण उनकी कविता में अधिक मिलता है। विचार कविता में कृत्रिमता के बदले सहज अभिव्यक्ति पर बल दिया गया। उपमानों, बिंबों और प्रतीकों का सहज प्रयोग किया गया। आठवें दशक के हिन्दी काव्य के लिए विचार कविता आन्दोलन एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

Module IV

समकालीन कविता

1. समकालीन कविता के उद्‌भव की पृष्ठभूमि क्या थी?

1976 में डॉ. विश्वंभरनाथ उपाध्याय ने समकालीन कविता की भूमिका नामक एक पुस्तक का प्रकाशन किया। इससे हिन्दी काव्य क्षेत्र में एक नये आन्दोलन का जन्म हुआ। इसमें अकविता, प्रतिबद्ध कविता, विचार कविता आदि विभिन्न काव्यान्दोलनों से जुडे कवि उपस्थित है। डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त ने कहा कि डॉ.विश्वंभरनाथ उपाध्यायजी ने साठोत्तर युग के सभी आन्दोलनों को एक मंच पर लाने के लक्ष्य से उन्हें समकालीन कविता का व्यापक शीर्षक प्रदान किया। असल में अकविता या प्रतिबद्ध कविता से अधिक विचार कविता के साथ इसका संबंध है।

2. समकालीन कविता की प्रमुख विशेषतायें क्या क्या है?

समकालीन शब्द अंग्रेजी के contemporary का पर्याय है। इससे स्पष्ट है कि समकालीन कविता समसामायिक संदर्भों से जुडी हुई है। साथ ही साथ यह युग विशेष की बदली हुई मानसिकता का द्योतक भी है। विश्वंभर नाथ उपाध्याय के अनुसार समकालीन कविता में जो हो रहा है उसका सीधा खुलासा है। इसे पढकर वर्तमान जीवन संदर्भ का बोध होता है। समकालीन कविता पूरी तरह विद्रोह की कविता है। इसमें अनावरण और आक्रमण दो प्रमुख प्रवृत्तियाँ हैं। अनावरण में अकविता जैसी निषेध मूलक कविता की अश्लील प्रवृत्तियाँ आती है तो आक्रमण में वामपंथी, प्रगतिशील प्रवृत्तियों का प्रभाव है। उपाध्यायजी ने समकालीन कविता के लिए संघर्षशील कविता विद्रोही कविता आदि नामों का भी प्रयोग किया है। समकालीन कविता जनवादी कविता है। अतः इसकी शैली सपाट है। इसमें कवियों ने जीवन का जीता जागता चित्र प्रस्तुत किया।

3. समकालीन कविता के प्रमुख कवियों का परिचय दीजिए:

समकालीन कवियों में धूमिल का नाम प्रसिद्ध है। वेणुगोपाल, लीलाधर जगूडी आदि भी इस धारा में आनेवाले अन्य कवि हैं। इनके अलाव अज्ञेय, रघुवीर सहाय, नरेन्द्र मोहन, सैमित्र मोहन जैसे अन्य आन्दोलनों से जुडे कवि भी समकालीन कविता के अन्तर्गत आते हैं।

धूमिलः

धूमिल साठोत्तरी पीढी के उल्लेखनीय कवि है। उनका असली नाम सुदामा पाण्डेय है। धूमिल के दो काव्यसंग्रह हैं- संसद से सडक तक और कल सुनना मुझे। इसके अलावा कुछ प्रमुख कविताओं को संकलित कर के सुदामा पाण्डेय का प्रजातंत्र नाम से प्रकाशित किया है। धूमिल की कविता भारतीय

जनतंत्र के मानव विरोधी हरकतों का सीधा साक्षात्कार करती है। धूमिल समकालीन कविता का प्रवर्तक माना जा सकता है। धूमिल की कविता में हिन्दुस्तान का सही चेहरा प्रस्तुत हुआ है। पटकथा उनकी बहु-चर्चित लंबी कविता है। कविताओं में उन्होंने आज़ादी, जनतंत्र, संसद, समाजवाद आदि पर कठोर व्यंग्य किया। आज़ादी के सालों बाद भी बुनियादी ज़रूरतों से वंचित भारत का आम आदमी धूमिल की कविता के केन्द्र में है। अपनी कविता में उन्होंने इस ठंडी, निर्जीव जनता को संबोधित किया। इस आदमी के लिए धूमिल ने ग्रामीण पदावली का प्रयोग किया सीधी सादी बोलचाल की भाषा को उन्होंने कविता के लिए अपनाया। वर्तमान राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था पर इस भाषा के ज़रिये उन्होंने आक्रमण किया। जैसे:

मैने देखा हर तरफ
रंग बिरंगे झंडे फहरा रहे है
गिरगिट की तरह रंग बदलते हुए
गुट से गुट टकरा रहे है।

कविता और भाषा के बारे में धूमिल का अपना दृष्टिकोण है।

उनके अनुसार कविता:

घेराव में,
किसी बौखलाए आदमी का
संक्षिप्त एकालाप है
भाषा में
आदमी होने की तमीज़ है।

कविता उनके लिए एक सार्थक वक्तव्य है। भाषा और कविता के प्रति धूमिल ने पूरी रचनात्मक जिम्मेदारी महसूस की। धूमिल की कविता मानव के केन्द्रीय प्रश्नों से जुडी कविता है। यह प्रतिबद्ध, प्रगतिशील और संघर्षशील चेतना की कविता है।

लीलाधर जगूडी:

समकालीन कविता में लीलाधर जगूडी का अपना विशिष्ट स्थान है। समकालीन कविता को उन्होंने नयी भावभूमि प्रदान की है। शंखमुखी शिखरों में, नाटक ज़ारी है, इस यात्रा में, रात अब भी मौजूद है, बची हुई पृथ्वी, घबराए हुए शब्द, भय भी शक्ति देता है, अनुभव के आकाश में चाँद, महाकाव्य के बिना, ईश्वर की अध्यक्षता में और ख़बर का मुँह विज्ञापन से ढका है आदि उनके प्रकाशित काव्य संग्रह हैं। उनकी कविता में व्यापक धरातल पर मानव मूल्यों की पहचान मिलती है। उनकी कविताओं में सामाजिक

यथार्थ, राजनीतिक समझ एवं व्यवस्था का विरोध स्पष्ट परिलक्षित है। सत्ता के आतंक से घबराए आदमी को कवि सचेत करना चाहते है। कथ्य और शिल्प दोनों दृष्टि से उनकी कविता सहज और स्वाभाविक है।

ज्ञानेन्द्रपतिः

ज्ञानेन्द्रपति समकालीन कविता के जनवादी कवि के रूप में चर्चित कवि है। उनकी ज़्यादातर कवितायें निम्न मध्यवर्गीय जीवन पर आधारित है। उनके विचार और अनुभव बहुत गहरे हैं। अपनी कविता में वे सभी प्रकार के शोषण के ख़िलाफ लडते है, ख़ासकर प्रकृति शोषण के विरुद्ध। प्रकृति पर होनेवाले भयानक शोषण के विरुद्ध लिखी कवितायें गंगातट, संशयात्मा जैसे संग्रहों में संकलित है। ज्ञानेन्द्रपति की भाषा में अपनी मिट्टी की गंध भरी पडी है। साधारण से साधारण विषय को अपने सूक्ष्म निरीक्षण से वे सुन्दर चित्र बना देते है। भाषा पर उनका पूरा अधिकार है। विशेष रूप के शब्द-प्रयोग, बिंब, प्रतीक आदि को प्रयुक्त करके अर्थ का सही संकेत देने में वे बहुत सफल सिद्ध होते है।

उदय प्रकाशः

उदय प्रकाश समकालीन हिन्दी साहित्य के युग प्रवर्तक तथा युग संचालक साहित्यकार है। वे कवि ही नही कहानीकार के रूप में भी विख्यात है। सुनो कारीगर, रात में हारमोनियम, अबूतर कबूतर, एक भाषा हुआ करती है आदि उदयजी के काव्य संग्रह हैं। उदय प्रकाश की कवितायें मुख्य रूप से व्यवस्था विरोधी है जिनमें भ्रष्ट एवं जीर्ण राजनीतिक अन्यायों के विरुद्ध विध्वंस का स्वर प्रबल है। अस्सी के बाद हिन्दी कविता को उत्तराधुनिकता का स्वरूप प्रदान करनेवालों में उदयजी अग्रणी है। उनकी कविता भूमण्डलीकृत उत्तराधुनिक संस्कार के विभिन्न आयामों से होकर गुज़रती है। 'बाजारवाद, विज्ञापनवाद, विकास और विस्थापन, प्रौद्योगिक संस्कार आदि अस्योत्तर कालीन सारी विशेषताओं और विसंगतियों के प्रति गहरी चिन्ता उनकी कविता में मौजूद है। साथ ही साथ औरतें, माँ जैसी तरल अनुभूतियों की कवितायें भी उनकी तूलिका से जन्म ली हैं।

चन्द्रकान्त देवतालेः

समकालीन कविता में चन्द्रकान्त देवताले बहुआयामी काव्यचेतना के कवि है। हड्डियों में छिपा ज्वर, दीवारों पर ख़ून से, लकडबग्धा हँस रहा है, रोशनी के मैदान की तरफ, भूखण्ड तप रहा है, आग हर चीज़ में बताई गयी थी, पत्थर की बेंच, उसके सपने, इतनी पत्थर रोशनी, उजाड में संग्रहालय आदि देवताले जी के प्रसिद्ध काव्य संग्रह हैं।

देवताले की कविता का स्रोत वर्तमान समाज और परिवेश है जिनकी विद्रूपताओं पर उन्होंने प्रहार किया। गांव, कस्बे और नगरों की पृष्ठभूमि में लिखी उनकी कवितायें वर्तमान समय की सत्यता को अभिव्यक्त करती है। विसंगतियों और विकलताओं के साथ साथ उन्होंने अपनी कविता में मानवीयता को भी निचोड रखा है और विभिन्न मायनों में उसकी अभिव्यक्ति की है। उनकी कविता में एक ओर भ्रष्ट

व्यवस्था और राजनीति पर विरोध है तो दूसरी ओर मानवीय अनुभूतियों की आर्द्रता का चित्रण भी है। अतः उनकी कविता को किसी वाद के बंधन में सीमित रख्रना उचित नही है। उनकी रचनाप्रक्रिया निरन्तर विकास शील है।

बलदेव वंशी:

बलदेव वंशी मूलतः विचार करविता के प्रवक्ता है। लेकिन समकालीन कविता में उनका विशेष स्थान है। उनके प्रसिद्ध काव्यसंग्रह हैं- दर्शक दीर्घ से, उपनगर की वापसी, अंधेरे के बावजूद, बच्चे की दुनिया तथा आत्मदान, कही कोई आवाज़ नही, हवा में खिलखिलाती लौ आदि। उनकी कविता पूँजीवादी व्यवस्था और राजनीतिक अव्यवस्था पर कठोर व्यंग्य करती है। कथ्य के समान शिल्प की दृष्टि से ली उनकी कविता में नवीनता है। शिल्प में उन्होंने कई नूतन प्रयोग किये है। उनका इतिहास बोध ठोस है। वे अतीत के माध्यम से वर्तमान समस्याओं को प्रस्तुत करते है। आत्मदान कविता इसका उत्तम उदाहरण है। इसमें अहल्या के पौराणीक संदर्भ को आधार बनाकर उन्होंने वर्तमान समस्याओं की ओर पाठकों का ध्यान आकृष्ट करते है। इस प्रकार हिन्दी कविता को नयी दिशी एवं नयी दृष्टि प्रदान करने में बलडेव वंशी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है।

अरुण कमल:

अरुण कमल वर्तमान हिन्दी कविता के पथ प्रदर्शकों में अग्रणी है। अभी तक उनके पाँच काव्यसंग्रह प्रकाशित हुए हैं- अपनी केवल धार, नये इलाके में, पुतली में संसार, सबूत और मै वो शंख्र महाशंख्र। नये इलाके में साहित्य अकादमी पुरस्कार से पुरस्कृत है। अरुण कमल की कवितायें मानव स्थिति और नियति से संचलित कवितायें हैं। उनमें एक नैतिकता अन्तर्निहित है। उनकी कविता में बदलती दुनिया के प्रतिपल परिवर्तित परिवेश के अनेक आयाम हैं। इसके साथ ही बदलाव के कारण ख्रोये हुए मूल्यों के प्रति अकुलाहट भी। अभावग्रस्त मध्यवर्गीय त्रासदी अरुण कमल की कविता में अंकित है।

अन्य कवि:

समकालीन कविता के एक उल्लेख्रनीय कवि है राजेश जोशी। समरगाथा, एक दिन बोलेंगे पेड, मिट्टी का चेहरा आदि उनके काव्यसंग्रह है। आलोकधन्वा वाम चेतना का कवि है। मंगलेश डबराल की कविताओं में निम्नवर्गीय जीवन का जीवन्त चित्रण मिलता है। पहाड पर लालटेन उनका चर्चित काव्य संकलन है। अकविता के कवि राजीव सक्सेना समकालीन कविता के भी श्रेष्ठ कवि है। मास्येन्द्र शुक्ल, नन्द भरद्वाज, अभिमन्यु अनत आदि कवियों ने भी समकालीन कविता के विकास में योग दिया है।

समकालीन कविता की उपलब्धि क्या है?

सन् सत्तर के आसपास हिन्दी में विकसित समकालीन कविता की मुख्य उपलब्धि उसकी जनवादिता है। इस काव्यधारा ने कविता को जनता के निकट लाकर खडा कर दिया। यह स्वातंत्र्योत्तर जन अभिभाषकों की कविता है। समकालीन कवि जनता के लिए सोचते है, उनके लिए काम करते है। जनता के प्रति यह प्रतिबद्धता समकालीन कविता का मुख्य आकर्षण है। जनता से बोलने के लिए समकालीन कवियों ने आम जनता की भाषा का प्रयोग किया। उनकी भाषा शैली सपाट बयानी है। जनता के बीच प्रयुक्त बिंबों, मुहावरों आदि का प्रयोग करके इन्होंने कविता को जनकीय बना दिया।